कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत कृषि अखबार

Postal R.No.MP/BPL/525/2025-27 RNI No. Raj HIN/2000/3239, डाक प्रेषण का दिन- मंगलवार, बुधवार

कृषक जगत

राष्ट्रीय कृषि अखबार

भोपाल-जयपुर-रायपुर ISSN -0970-8650

संस्थापित 1946 जयपुर, प्रकाशन सोमवार, 2 मार्च 2026 वर्ष-26 अंक-23 मूल्य-12/- कुल पृष्ठ-12 www.krishakjagat.org पृष्ठ-1

कृषक जगत न्यूज़ वेबसाइट पर जाने के लिए QR कोड स्कैन करें

होली की हार्दिक शुभकामनाएं

कृषक जगत के सुधी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, प्रतिनिधियों एवं शुभ चिंतकों को होली पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं।

- कृषक जगत परिवार

पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026

किसानों के बकाया भुगतान पर 12% ब्याज

श्री शिवराज सिंह चौहान ने कृषि सुधारों का रोडमैप रखा

नई दिल्ली (कृषक जगत)। केंद्रीय कृषि तथा ग्रामीण विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आईएआरआई) में पूसा कृषि विज्ञान मेले का उद्घाटन करते हुए लाइसेंस प्रक्रिया, सब्सिडी वितरण आदि से जुड़े कृषि सुधारों का रोडमैप प्रस्तुत किया।

आईसीएआर-आईएआरआई परिसर में आयोजित इस वार्षिक मेले में वैज्ञानिकों, प्रगतिशील किसानों, कृषि उद्यमियों और नीति-निर्माताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का शुभारंभ पौधारोपण से हुआ। इस मौके पर कृषि सचिव श्री देवेश चतुर्वेदी, आईसीएआर के महानिदेशक डॉ. एम. एल. जाट और आईएआरआई के निदेशक डॉ. सी. एच. श्रीनिवास राव सहित कई अधिकारी और किसान उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सात किसानों को आईएआरआई कृषि अध्येता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट्स के संबंध में उच्च स्तरीय बैठक

किसानों को पर्याप्त और निर्बाध बिजली आपूर्ति राज्य सरकार की प्राथमिकता : मुख्यमंत्री

- **पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट्स को समय पर किया जाए पूरा**
- **संबंधित विभाग परस्पर समन्वय से करें काम**
- **8 गीगावाट बिजली उत्पादन के लिए चिह्नित**
- **6 पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट्स पर दिए निर्देश**

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार किसानों को पर्याप्त और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित कर रही है। उन्होंने कहा कि बिजली बचाना भी विद्युत उत्पादन के समान है। इसी क्रम में उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि जमीनी स्तर पर सघन दौरे कर बिजली चोरी के मामलों पर सख्त कार्रवाई की जाए।

श्री शर्मा मुख्यमंत्री कार्यालय में पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट्स के संबंध में आयोजित उच्च स्तरीय बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पम्प स्टोरेज प्रोजेक्ट्स सस्ते होने के साथ ही लम्बी अवधि के लिए कारगर हैं, जिससे आने वाले समय में पर्याप्त बिजली मिलना संभव हो सकेगा। इससे किसानों के साथ-साथ घरेलू उपभोक्ता को भी गुणवत्तापूर्ण बिजली आपूर्ति सुनिश्चित हो सकेगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि इन प्रोजेक्ट्स को समय पर पूरा किया जाए, ताकि इनका लाभ उपभोक्ताओं को शीघ्र मिल सके। उन्होंने प्रोजेक्ट्स की क्लीयरेंस के लिए विभिन्न विभागों को आपसी समन्वय स्थापित करने एवं कार्यों की सतत् मॉनिटरिंग करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए।

मुख्यमंत्री ने सभी राजकीय कार्यालयों पर जल्द से जल्द सोलर पैनल लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिन कार्यालयों में अब तक सोलर पैनल नहीं लगे हैं, उन्हें सूचीबद्ध कर शीघ्र कार्य शुरू किया जाए। बैठक में 8 गीगावाट बिजली उत्पादन के लिए चिह्नित 6 प्रोजेक्ट्स पर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक में मुख्य सचिव श्री वी. श्रीनिवास सहित संबंधित विभागों के उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

ग्रीष्मकालीन बुवाई 2026 की शुरुआत सकारात्मक

20 फरवरी तक 21.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई

(निमिष गंगराड़े)

नई दिल्ली (कृषक जगत)। देश में ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई ने रफ्तार पकड़ ली है। 20 फरवरी 2026 तक कुल 21.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई हो चुकी है, जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि में यह आंकड़ा 20.38 लाख हेक्टेयर था। इस प्रकार चालू वर्ष में 0.92 लाख हेक्टेयर की वृद्धि दर्ज की गई है। यह आंकड़े कृषि मंत्रालय द्वारा जारी किए गए हैं।

वर्ष 2022-23 से 2024-25 के औसत के आधार पर ग्रीष्मकालीन फसलों का सामान्य क्षेत्र 75.37 लाख हेक्टेयर है। वर्ष 2025 में ग्रीष्मकालीन फसलों का अंतिम क्षेत्र 83.92 लाख हेक्टेयर रहा था, जो सामान्य क्षेत्र से अधिक था।

धान की बुवाई स्थिर

धान की बुवाई 17.78 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में हुई है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के बराबर है। धान का सामान्य ग्रीष्मकालीन क्षेत्र 31.49 लाख हेक्टेयर है, जबकि वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 33.28 लाख हेक्टेयर रहा था। शुरुआती चरण में धान की बुवाई का स्थिर रहना संकेत देता है कि प्रमुख सिंचित क्षेत्रों में बुवाई सामान्य गति से चल रही है।

दलहनों में बढ़ोतरी

दलहनों का कुल क्षेत्र 0.91 लाख हेक्टेयर रहा है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 0.76 लाख हेक्टेयर से 0.15 लाख हेक्टेयर अधिक है। मूंग की बुवाई 0.59 लाख हेक्टेयर में हुई है, जो पिछले वर्ष के 0.56 लाख हेक्टेयर से अधिक है। उड़द का क्षेत्र 0.25 लाख हेक्टेयर है, जबकि पिछले वर्ष यह 0.19 लाख हेक्टेयर था। अन्य दलहनों का क्षेत्र 0.07 लाख हेक्टेयर दर्ज किया गया है, जो पिछले वर्ष 0.01 लाख हेक्टेयर था।

दलहनों का सामान्य ग्रीष्मकालीन क्षेत्र 23.40 लाख हेक्टेयर है और वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 27.07 लाख हेक्टेयर रहा था।

श्री अन्न एवं मोटे अनाज में विस्तार

श्री अन्न एवं मोटे अनाज का कुल क्षेत्र 1.38 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 1.08 लाख हेक्टेयर से 0.30 लाख हेक्टेयर अधिक है। ज्वार का क्षेत्र 0.04 लाख हेक्टेयर है, जबकि पिछले वर्ष यह 0.03 लाख हेक्टेयर था। बाजरा 0.12 लाख हेक्टेयर में बोया गया है, जो पिछले वर्ष के 0.14 लाख हेक्टेयर से थोड़ा कम है। रागी का क्षेत्र 0.15 लाख हेक्टेयर पहुंच गया है, जो पिछले वर्ष 0.02 लाख हेक्टेयर था। छोटे मिलेट्स का क्षेत्र 0.01 लाख हेक्टेयर है। मक्का 1.06 लाख हेक्टेयर में बोया गया है, जो पिछले वर्ष के 0.89 लाख हेक्टेयर से अधिक है।

इस श्रेणी का सामान्य क्षेत्र 12.08 लाख हेक्टेयर है, जबकि वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 14.06 लाख हेक्टेयर रहा था।

तिलहनों में तेज वृद्धि

तिलहनों का कुल क्षेत्र 1.24 लाख हेक्टेयर हो गया है, जो पिछले वर्ष की समान अवधि के 0.77 लाख हेक्टेयर से 0.46 लाख हेक्टेयर अधिक है। मूंगफली 1.04 लाख हेक्टेयर में बोई गई है, जो पिछले वर्ष के 0.60 लाख हेक्टेयर से काफी अधिक है। सूरजमुखी 0.07 लाख हेक्टेयर में बोया गया है, जो पिछले वर्ष 0.06 लाख हेक्टेयर था। तिल का क्षेत्र 0.12 लाख हेक्टेयर है, जो पिछले वर्ष के बराबर है। अन्य तिलहनों का क्षेत्र 0.01 लाख हेक्टेयर दर्ज किया गया है।

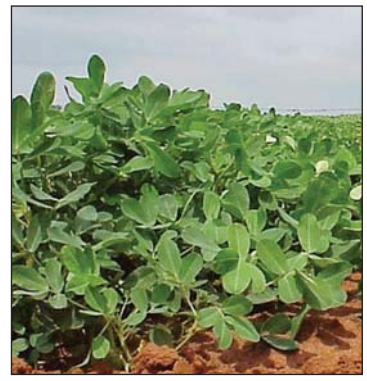

तिलहनों का सामान्य ग्रीष्मकालीन क्षेत्र 8.40 लाख हेक्टेयर है, जबकि वर्ष 2025 में अंतिम क्षेत्र 9.51 लाख हेक्टेयर रहा था।

कुल स्थिति

कुल मिलाकर 20 फरवरी 2026 तक 21.30 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में ग्रीष्मकालीन फसलों की बुवाई हो चुकी है। दलहन, मोटे अनाज और तिलहन में वृद्धि दर्ज की गई है, जबकि धान का क्षेत्र स्थिर है। आगामी सप्ताहों में सिंचाई की उपलब्धता और मौसम की स्थिति के आधार पर बुवाई का रकबा और बढ़ने की संभावना है।

ग्रीष्मकालीन फसलों के अंतर्गत क्षेत्र प्रगति (क्षेत्रफल : लाख हेक्टेयर में)

क्र.	फसल	सामान्य ग्रीष्म क्षेत्र (DES)*	अंतिम ग्रीष्म क्षेत्र 2025	चालू वर्ष 2026	पिछले वर्ष की समान अवधि 2025	वृद्धि/ कमी
1.	**धान**	**31.49**	**33.28**	**17.78**	**17.78**	**0.00**
2.	**दलहन**	**23.40**	**27.07**	**0.91**	**0.76**	**0.15**
a	मूंग	20.44	23.49	0.59	0.56	0.03
b	उड़द	2.96	3.58	0.25	0.19	0.06
c	अन्य दलहन	0.00	–	0.07	0.01	0.00
3.	**मोटे अनाज**	**12.08**	**14.06**	**1.38**	**1.08**	**0.30**
a	ज्वार	0.34	0.36	0.04	0.03	0.02
b	बाजरा	4.43	5.20	0.12	0.14	-0.03
c	रागी	0.31	–	0.15	0.02	0.13
d	छोटे मिलेट्स	0.02	–	0.01	0.00	0.01
e	मक्का	6.98	8.50	1.06	0.89	0.17
4.	**तिलहन**	**8.40**	**9.51**	**1.24**	**0.77**	**0.46**
a	मूंगफली	3.40	4.20	1.04	0.60	0.44
b	सूरजमुखी	0.34	0.35	0.07	0.06	0.01
c	तिल	4.66	4.96	0.12	0.12	0.00
d	अन्य तिलहन	0.00	–	0.01	0.00	0.01
	कुल	**75.37**	**83.92**	**21.30**	**20.38**	**0.92**

*सामान्य क्षेत्र वर्ष 2022-23 से 2024-25 के औसत पर आधारित है।

पूसा मेले में आईपीएल की सक्रिय भागीदारी

नई दिल्ली (कृषक जगत)। नई दिल्ली, पूसा कृषि विज्ञान मेले में देशभर की उर्वरक, कीटनाशक और कृषि क्षेत्र से जुड़ी कंपनियों ने भाग लिया और किसानों को उर्वरक प्रबंधन, फसल पोषण तथा आधुनिक तकनीकों की जानकारी दी।

इंडियन पोटाश लिमिटेड (आईपीएल) ने अपने तीन स्टॉल को एकीकृत कर एक समग्र कृषि स्टॉल स्थापित किया, जो आकर्षण का केंद्र रहा। यहां संतुलित उर्वरक प्रबंधन, फसल पोषण, पशु आहार, डेयरी एवं शुगर सेक्टर से जुड़े उत्पादों की जानकारी प्रदान की गई। किसानों को साहित्य वितरित किए गए। आईपीएल ने किसानों को 6R सिद्धांत-सही स्रोत, सही मात्रा, सही विधि, सही समय, उर्वरकों का सही संयोजन और जल का सही प्रबंधन-अपनाने के लिए प्रेरित किया। कंपनी के अधिकारियों ने बताया कि मेले के दौरान कृषि विशेषज्ञों ने किसानों से सीधा संवाद किया और आधुनिक पैकेज ऑफ प्रैक्टिसेज (POPs) पर मार्गदर्शन प्रदान किया।

क्रॉपलाइफ ने सुरक्षित फसल संरक्षण पर दिया जोर

नई दिल्ली। क्रॉपलाइफ इंडिया ने पूसा कृषि विज्ञान मेला 2026 में फसल संरक्षण उत्पादों के सुरक्षित और जिम्मेदार उपयोग को बढ़ावा देने के लिए विशेष अभियान चलाया। क्रॉपलाइफ इंडिया ने अपने स्टॉल पर किसानों को सही खुराक, सुरक्षित छिड़काव, भंडारण नियम और उत्पाद की प्रामाणिकता की जांच संबंधी जानकारी दी। किसानों को सलाह दी गई कि वे केवल

लाइसेंसधारी विक्रेताओं से ही उत्पाद खरीदें, पक्का बिल लें, पैकेजिंग व एक्सपायरी तिथि जांचें और लेबल निर्देशों का पालन करें, ताकि नकली व अवैध उत्पादों से बचा जा सके। स्टॉल का मुख्य आकर्षण लोक शैली में प्रस्तुत जागरूकता गीत रहा-

'गांव गांव टोले टोले घर घर अलख जगाना है,
कीटनाशक उपयोग को जिम्मेदारी से निभाना है।'

इस प्रस्तुति के माध्यम से छिड़काव की मात्रा, मिश्रण विधि, प्रतीक्षा अवधि और सुरक्षा सावधानियों जैसे तकनीकी संदेशों को सरल भाषा में समझाया गया।

पूसा कृषि विज्ञान मेला... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

समयबद्ध भुगतान और वित्तीय जवाबदेही: श्री चौहान ने कहा कि यदि कोई एजेंसी या राज्य सरकार किसानों का भुगतान रोकती है, तो उसे बकाया राशि पर 12 प्रतिशत ब्याज देना होगा। उन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) का उल्लेख करते हुए कहा कि लगभग 75 प्रतिशत छोटे किसान प्रभावी 4 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण प्राप्त कर रहे हैं। ऋण वितरण में देरी मंजूर नहीं है और बैंकों को समयबद्ध तथा सरल प्रक्रिया सुनिश्चित करनी होगी।

योजनाओं की निगरानी, केवीके की भूमिका और लाइसेंस सुधार : कृषि यंत्रीकरण, ड्रिप, स्प्रिंकलर, पालीहाउस और ग्रीनहाउस जैसी योजनाओं का उल्लेख करते हुए श्री चौहान ने कहा कि केंद्र सरकार 18 से अधिक योजनाओं के तहत राज्यों को संसाधन उपलब्ध कराती है। हालांकि, केवल धन जारी करना पर्याप्त नहीं है; यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि लाभ वास्तविक किसानों तक पहुँचे। एक जिले का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि सूची में 700 किसानों के नाम होने के बावजूद केवल 158 किसानों को मशीनें मिलीं। निगरानी तंत्र को मजबूत किया जाएगा।

एमएसपी, सब्सिडी और 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' : न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद की वर्तमान तीन महीने की समय-सीमा को अव्यावहारिक बताते हुए कृषि मंत्री ने कहा कि किसानों के पास लंबे समय तक भंडारण की क्षमता नहीं होती। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्यों के साथ मिलकर अधिकतम एक महीने में खरीद प्रक्रिया पूरी करने की व्यवस्था बनाई जाए, ताकि किसानों को शीघ्र भुगतान मिल सके। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार खाद सब्सिडी पर लगभग 2 लाख करोड़ रुपये खर्च करती है। इस पर विचार किया जाना चाहिए कि सब्सिडी सीधे किसानों के खातों में डीबीटी के माध्यम से दी जाए, ताकि किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार उर्वरक का चयन कर सकें। श्री चौहान ने 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' का उल्लेख करते हुए कहा कि अप्रैल से खरीफ सीजन से पहले वैज्ञानिकों की टीमें गांव-गांव जाकर किसानों से सीधा संवाद करेंगी।

श्री शर्मा से रामगंजमंडी के धनिया व्यापारी प्रतिनिधिमण्डल ने की मुलाकात

धनिया उत्पादक किसानों के हितों एवं विपणन व्यवस्था पर दिए सुझाव

जयपुर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा से मुख्यमंत्री कार्यालय में रामगंजमंडी (कोटा) के धनिया व्यापारियों के प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस दौरान प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने राज्य में धनिया उत्पादक किसानों के हितों, विपणन व्यवस्था को अधिक प्रभावी बनाने एवं मंडी शुल्क से जुड़े विषयों पर सुझाव साझा किए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार किसानों की आय बढ़ाने, कृषि व्यापार को सुगम बनाने तथा कृषि मंडियों को अधिक सुदृढ़ और आधुनिक बनाने के लिए संकल्पित है। हमारा लक्ष्य है कि किसानों एवं कृषि क्षेत्र से जुड़े व्यापारियों को अधिकतम सुविधाएं प्रदान करते हुए कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को प्रतिनिधिमण्डल के सुझावों का समुचित आकलन एवं परीक्षण के निर्देश दिए।

इस दौरान अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) श्री अखिल अरोड़ा, प्रमुख शासन सचिव कृषि एवं उद्यानिकी श्रीमती मंजू राजपाल सहित संबंधित विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

इस बार गोकाष्ठ से करें होलिका दहन, यह पर्यावरण अनुकूल

जयपुर। पशुपालन एवं गोपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने होली के पावन पर्व पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दी। उन्होंने कहा यह होली सभी के जीवन में प्यार, सौहार्द और सकारात्मकता के रंग भरे। श्री कुमावत ने इस बार होलिका दहन के लिए गोकाष्ठ के उपयोग पर बल देते हुए कहा कि स्वच्छ और हरा-भरा पर्यावरण मानव जीवन का मूल आधार है। उन्होंने कहा इस बार होलिका दहन गाय के गोबर की लकड़ी यानी गोकाष्ठ से करें। इसके जरिये आप गोसंवर्धन का पुण्य भी अर्जित कर सकते हैं। गोकाष्ठ के इस्तेमाल से हम गाय के संवर्धन की दिशा में एक सार्थक कदम उठाएंगे।

उन्होंने कहा कि गोकाष्ठ लकड़ी की तुलना में पर्यावरण के ज्यादा अनुकूल है। गोकाष्ठ जलने पर कम धुआं और कम कार्बन का उत्सर्जन करता है। विशेषज्ञों के अनुसार इसके प्रयोग से प्रदूषण लकड़ी की तुलना में 35 प्रतिशत कम होता है। गोकाष्ठ का धुआं वातावरण को प्रदूषित करने के बजाय शुद्ध करता है।

कृषि योजनाओं की समीक्षा हेतु गठित कमेटी की बैठक संपन्न

योजनाओं का लाभ अंतिम किसान तक समयबद्ध व पारदर्शी रूप से पहुंचाने पर जोर

जयपुर। राज्य में किसानों के हित में संचालित कृषि योजनाओं की प्रभावी क्रियान्विति, प्रगति एवं जमीनी स्तर पर आ रही समस्याओं की समीक्षा को लेकर

राज्य की कृषि योजनाओं के क्रम में गठित कमेटी की महत्वपूर्ण बैठक पंत कृषि भवन में आयोजित की गई। बैठक में योजनाओं के लाभ को अंतिम छोर पर बैठे किसान तक समय पर पहुंचाने तथा उनकी आय में सतत वृद्धि सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख शासन सचिव, कृषि एवं उद्यानिकी, श्रीमती मंजू राजपाल ने कहा कि राज्य सरकार किसानों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी योजनाओं का क्रियान्वयन पारदर्शी ढंग से हो तथा किसानों को योजनाओं का अधिकतम लाभ दिलाने के लिए जमीनी स्तर पर आने वाली समस्याओं का त्वरित समाधान किया जाए।

संयुक्त शासन सचिव, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, श्री संजय अग्रवाल ने कहा कि राजस्थान में बागवानी फसलों-फल, फूल एवं सब्जियों-की अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने इन फसलों के चयन के साथ ठोस कार्ययोजना तैयार कर उसे धरातल पर प्रभावी रूप से लागू करने पर ज़ोर दिया, जिससे किसानों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सके।

उन्होंने जल संरक्षण के अंतर्गत सूक्ष्म सिंचाई प्रणालियों को अधिक से अधिक बढ़ावा देने तथा प्रदेश में ईसबगोल, जीरा, सौंफ जैसी फसलों की उन्नत एवं नई किस्मों को व्यापक रूप से प्रमोट करने की आवश्यकता बताई।

बैठक में राज्य सरकार की प्रमुख कृषि योजनाओं की वर्तमान स्थिति पर विस्तार से चर्चा की गई। योजनाओं के अंतर्गत किसानों को मिल रहे लाभ, फसल उत्पादन बढ़ाने, आधुनिक कृषि तकनीकों के उपयोग, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, उन्नत बीज वितरण, मृदा स्वास्थ्य सुधार तथा किसानों की आय बढ़ाने से जुड़े विषयों पर गहन मंथन हुआ। साथ ही बागवानी, पशुपालन, जैविक खेती एवं सहायक कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने पर भी सहमति बनी।

कमेटी ने निर्णय लिया कि सभी योजनाओं की नियमित मॉनिटरिंग की जाएगी तथा जिला स्तर पर समीक्षा बैठकों के माध्यम से प्रगति रिपोर्ट प्राप्त की जाएगी। अधिकारियों को किसानों से सीधे संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं का प्राथमिकता से समाधान करने के निर्देश दिए गए।

बैठक में आयुक्त कृषि सुश्री चिन्मयी गोपाल, आयुक्त उद्यानिकी श्रीमती शुभम चौधरी, निदेशक कृषि विपणन विभाग श्री राजेश कुमार चौहान सहित भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) अविकानगर, बीकानेर एवं भरतपुर के निदेशक, कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, कृषि विपणन विभाग तथा राजस्थान राज्य बीज निगम के अधिकारी उपस्थित रहे।

पात्र किसानों को समयबद्ध रूप से मिल रहा तारबंदी अनुदान : श्री मीणा

जयपुर। कृषि मंत्री श्री किरोड़ी लाल मीणा ने विधानसभा में कहा कि विधानसभा क्षेत्र सागवाड़ा में बड़ी संख्या में तारबंदी की पत्रावलियां निरस्त हुई हैं, जिसका मुख्य कारण मौके पर बताए गए खसरा का क्षेत्रफल कम होना, खसरा नंबर एक परिधि में न होना, सत्यापन से पूर्व तारबंदी का पाया जाना, आवेदक कृषक की मृत्यु हो जाना, किसानों का विभागीय निर्देशों पर तारबंदी पर सहमत न होना, किसानों में आपसी तालमेल न होना, व मापदंडों पर खरा न उतरने पर तारबंदी की पत्रावलियां निरस्त हो जाती है। साथ ही खेतों में फसल खड़ी होने के कारण इस वित्तीय वर्ष में तारबंदी करवाया जाना संभव नहीं हुआ।

श्री मीणा, सदस्य श्री शंकरलाल डेचा के पूरक प्रश्न का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा तारबंदी की योजना का लक्ष्य मूल रूप से जंगली सूअर व नीलगायों से फसलों को बचाना है। जिसमें डेढ़ फीट की दीवार के ऊपर तारबंदी की जाती है। जिलों को वित्तीय वर्ष के आरम्भ में आबादी एवं उपलब्ध पत्रावलियों के अनुसार लक्ष्य आवंटित किए जाते हैं, जिसमें 'पहले आओ, पहले पाओ' के आधार पर फाइलों का निस्तारण किया जाता है। यदि किसी जिले में लक्ष्य से अधिक पत्रावलियां प्राप्त हो जाती है, तो अन्यत्र स्थान से अतिरिक्त लक्ष्य का आवंटन कर दिया जाता है। वित्तीय वर्ष समाप्ति पर आवेदक पत्रावलियों को अग्रेषित कर पात्र कृषकों की पत्रावलियों का आगामी वर्ष में निस्तारण कर दिया जाता है।

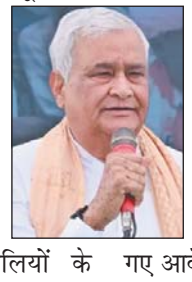

श्री मीणा ने सदस्य श्री शंकरलाल डेचा के मूल प्रश्न का लिखित जवाब देते हुए विधान सभा क्षेत्र सागवाड़ा में विगत दो वर्षों में कृषि उपकरण, पाईप लाईन व तारबंदी हेतु किसानों द्वारा किए गए आवेदनों व अनुदान स्वीकृति का वर्षवार संख्यात्मक विवरण सदन के पटल पर रखा।

श्री मीणा ने बताया कि वर्तमान में सरकार तारबंदी के लिए देय अनुदान में वृद्धि का कोई विचार नहीं रखती है। उन्होंने मूल प्रश्न का जवाब देते हुए बताया कि वर्ष 2026-27 की बजट घोषणा में सामुदायिक आधार पर 10 या 10 से अधिक कृषकों के स्थान पर समूह में न्यूनतम कृषकों की संख्यार 07 कर दी गयी।

उन्होंने कहा केन्द्रीय प्रवर्तित योजना राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन-तिलहन के अंतर्गत वर्ष 2017-18 से प्रारम्भ किए गए तारबंदी कार्यक्रम में कृषकों को 400 रंनिग मीटर तक तारबन्दी स्थापित करने पर ईकाई लागत का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम राशि रूपये 40 हजार दिए जाने का प्रावधान था। वर्ष 2023-24 में सामुदायिक आधार पर 10 या 10 से अधिक कृषकों के समूह में न्यूनतम 5 हेक्टेयर में तारबंदी किए जाने पर प्रति कृषक अनुदान राशि ईकाई लागत का 50 प्रतिशत से बढाकर 70 प्रतिशत या अधिकतम 56 हजार रूपये किए जाने का प्रावधान किया गया है।

कृषक जगत के स्वामित्व के सम्बन्ध में घोषणा

फार्म-4

रजिस्ट्रेशन ऑफ प्रेस एण्ड बुक अधिनियम की धारा -8 के अंतर्गत कृषक जगत के पत्र स्वामित्व व अन्य विषयों का विवरण-

1.	प्रकाशक	- एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर
2.	प्रकाशक की अवधि	- साप्ताहिक
3.	प्रकाशक का नाम	- विजय कुमार बोन्द्रिया
4.	राष्ट्रीयता	- भारतीय
5.	सम्पादक	- सुनील गंगराड़े
6.	उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के मालिक अथवा साझेदार 1 प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं	- विजय कुमार बोन्द्रिया सुनील गंगराड़े सचिन बोन्द्रिया अजय बोन्द्रिया एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर

मैं विजय कुमार बोन्द्रिया घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सही है.

विजय कुमार बोन्द्रिया
प्रकाशक

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार बोन्द्रिया द्वारा संदीप शर्मा मे. संदीप इन्टरप्राइजेस, एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राजस्थान) से प्रकाशित एवं पेपर प्रिंट इंडस्ट्रीज 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल (मध्यप्रदेश) से मुद्रित, सम्पादक : सुनील गंगराड़े, समन्वयक : रीतेश कोंडले. इस अंक का मूल्य रुपये 12/- वार्षिक शुल्क रुपये 600/- भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक कार्यालय का पंजीयन क्रं. Raj/HIN/2000/3239

कृषक जगत
संस्थापक : स्व. माणिकचन्द्र बोन्द्रिया - स्व. सुरेशचन्द्र गंगराड़े

अमृत जगत

जिसने अहंकार छोड़ दिया वे भवसागर तर गया।
- योग वशिष्ठ

होली के रंग को बदरंग न बनाएं

वैसे तो भारत के सभी त्यौहार उल्लास, उमंग और खुशियों से लबरेज होते हैं लेकिन होली ही एक ऐसा त्यौहार है जिसमें हर आयु वर्ग के लोग पूरी मस्ती से रंगों में सरोबार हो जाते हैं। होली भारतीय संस्कृति का वह उल्लासपूर्ण पर्व है, जिसमें रंग केवल चेहरे पर नहीं, बल्कि मन पर भी लगाए जाते हैं। यह पर्व वसंत के आगमन, प्रकृति के नवजीवन और सामाजिक समरसता का प्रतीक है। फाल्गुन पूर्णिमा की संध्या से लेकर देर रात्रि में होलिका दहन किया जाता है जो हमें बुराई पर अच्छाई की विजय का संदेश देती है। अगले दिन रंगोत्सव के रूप में प्रेम, सौहार्द्र और उत्साह के साथ समूचा देश रंगमय हो जाता है। किंतु विडंबना यह है कि जिस पर्व का उद्देश्य मन का मैल धोकर आपस में प्रेम और सौहार्द्र का परिचय देना होता है, वही कभी-कभी असंयम, प्रदूषण और अव्यवस्था के कारण बदरंग हो जाता है। होली वास्तव में रंगों का ही त्यौहार और खेल नहीं बल्कि यह सामाजिक भेदभाव मिटाने और रिश्तों की कड़वाहट को दूर करने का भी एक सुअवसर प्रदान करता है। लोकगीतों, फाग और हास्य-व्यंग्य की परंपरा समाज को खुलकर हँसने और जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। भारतीयता की इस विशाल विरासत और परंपरा में होली प्रेम और मेल-मिलाप का पर्याय भी बन जाता है लेकिन जब स्वार्थ, वैमनस्यता और संकुचित सोच के कारण कभी-कभी इस पर्व का मूल संदेश गौण हो जाता है। होली में पहले प्राकृतिक रंगों का ही उपयोग किया जाता रहा है तथा टेसू (पलाश) के फूलों से केसरिया रंग, हल्दी से पीला और चुकंदर से गुलाबी रंग बनाया जाता था। लेकिन पिछले दो-तीन दशकों से बाजार में मिलने वाले सस्ते रासायनिक रंगों ने होली के स्वरूप को प्रभावित किया है। इन रंगों में सीसा, क्रोमियम और अन्य हानिकारक तत्व मिलाए जाते हैं जो त्वचा रोग, एलर्जी, आँखों में जलन और बालों को नुकसान पहुंचाते हैं। बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए ये रासायनिक रंग तो विशेष रूप से हानिकारक होते हैं। आज आवश्यकता है कि हम फिर से उन्हीं सुरक्षित और पर्यावरण-अनुकूल रंगों की ओर लौटें। घर में बने गुलाल या विश्वसनीय स्रोत से खरीदे गए हर्बल रंग स्वास्थ्य के लिए बेहतर विकल्प हैं। हालांकि कुछ वर्षों से प्राकृतिक रंगों और गुलाल से होली खेलने का रिवाज बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश में तो वन विभाग हर्बल रंग और गुलाल तैयार कर रियायत कीमतों पर आम जनता को उपलब्ध

करवाता है। आम जनता में भी प्राकृतिक रंगों के प्रति रूचि बढ़ रही है और इसकी लोकप्रियता का इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि रंग और गुलाल की मांग पूरी नहीं कर पाते हैं। होली में एक ओर जहां प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण दिखाई देता है वहीं दूसरी ओर कुछ लोग होली के नाम पर छेड़छाड़, अभद्रता और जबरदस्ती रंग लगाने से बाज नहीं आते जिसके कारण घटित होने वाली ये घटनाएँ समाज के लिए कलंक हैं। 'बुरा न मानो होली है' वाक्य की आड़ में किसी को भी मर्यादा से इतर कोई भी असामाजिक कार्य करने की छूट नहीं दी जा सकती। यह वाक्य किसी को असहज या आहत करने का लाइसेंस नहीं हो सकता। किसी की सहमति के बिना रंग लगाना या मज़ाक करना अनुचित है। परिवार और समाज का दायित्व है कि वह इस दिन विशेष सतर्कता बरते और महिलाओं, बच्चों तथा बुजुर्गों की गरिमा का सम्मान करे। होली में नशे के प्रचलन में वृद्धि हो रही है और नशा करने वालों में सर्वाधिक युवा वर्ग होता है। शराब या अन्य मादक पदार्थों के सेवन से दुर्घटनाएँ होती हैं। विवाद भी होते हैं और कभी-कभी ये तो प्राणघातक भी सिद्ध होते हैं। इससे पूरे उत्सव का वातावरण ही दूषित हो जाता है। होली के अवसर पर जल की अत्यधिक बर्बादी भी एक गंभीर चिंता का विषय हो सकता है। जल संकट से जूझते देश में करोड़ों लीटर पानी केवल मनोरंजन के लिए बहा दिया जाता है। इसलिए कुछ वर्षों से केवल गुलाल से सूखी होली खेलने की परंपरा का प्रचलन बढ़ रहा है। यह न केवल पर्यावरण के अनुकूल है, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी अधिक संयमित है। गुलाल से होली खेलने से पर्व की मर्यादा बनी रहती है और विवाद आदि से भी निजात मिलती है। सोशल मीडिया के इस दौर में अधिकांश लोग अपनी तस्वीर साझा करना चाहते हैं और कभी-कभी अतिउत्साह में या जान-बूझकर विशेषकर महिलाओं/बालिकाओं के चित्र भी वायरल कर देते हैं। किसी की अनुमति के बिना उसकी तस्वीर या वीडियो साझा करना निजता का उल्लंघन है। इसलिए इस बात का भी ध्यान रखते हुए डिजीटल मर्यादा का पालन करना चाहिए। जिस तरह मकर संक्रान्ति के अवसर पर चीनी मांझा पर प्रतिबंध के बावजूद पतंग उड़ाने के लिए यह मांझा चोरी-छुपे विक्रय किया जाता है और हर साल अनेक घटनाएं चीनी मांझा के कारण होती हैं। इसी प्रकार होली के दौरान हानिकारक रासायनिक रंग बाजारों में खुलेआम विक्रय किये जाते हैं। यहां सबसे अधिक जिम्मेदारी परिवार की होती है, उन्हें ऐसे हानिकारक रासायनिक रंगों को घर में लाने से परहेज करना चाहिए। प्रशासन को भी चाहिए कि वह मिलावटी और हानिकारक रासायनिक रंगों की बिक्री पर रोक लगाए और सुरक्षा के उचित प्रबंध करे। आइए, इस होली में हम संकल्प लें कि प्राकृतिक रंगों और गुलाल का ही उपयोग तथा यथासम्भव जल की भी बचत करेंगे। यदि कोई रंग या गुलाल लगाने से मना करता है तो जबरदस्ती रंग और गुलाल नहीं डालेंगे। नशे से दूर रहेंगे और पर्यावरण की रक्षा करेंगे।

ओरण के अस्तित्व के लिए 'राष्ट्रीय गोसेवा नीति'

• कौशल किशोर

राजस्थान के करीब 41 लाख एकड़ 'ओरण भूमि' पर संकट के बादल छाए हुए हैं। सूबे की सरकार ने जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, जालोर और पाली जिले में 'सोलर पार्क' जैसे व्यावसायिक कार्यों के लिए नियमों को ताक पर रखकर सैकड़ों एकड़ ऐसी जमीन का भू-उपयोग बदलकर जनता को विरोध के लिए मजबूर किया है। इस 'ओरण क्षेत्र' को देश के अन्य क्षेत्रों में 'देवभूमि,' 'देवबनी' और 'गोचर' कहा जाता है।

सार्वजनिक उपयोग के कारण इसका नियंत्रण ग्रामसभा के आधीन होता है इसलिए ग्राम पंचायत की सहमति के बिना सरकार इस परिवर्तन के लिए अधिकृत भी नहीं है। ऐसा करने से पहले उतनी ही भूमि गोचर-ओरण के लिए अन्यत्र आवंटित करने का विधान है। इसके विरुद्ध ग्रामसभा प्रस्ताव पारित कर प्रशासन को ज्ञापन देने के साथ धरना-प्रदर्शन व यात्रा निकालकर जन-जागरण और सत्याग्रह करने में लगी है। सरकार और प्रशासन की कोशिशों के बावजूद यह सिलसिला थमने का नाम ही नहीं ले रहा है। इसी के साथ 'अरावली संरक्षण आंदोलन' भी सुर्खियों में है।

उच्चतम न्यायालय केन्द्र सरकार की अनुशंसा पर 20 नवम्बर 2025 को अरावली पर्वत की परिभाषा बदल देता है। राजस्थान और गुजरात ही नहीं, बल्कि दिल्ली और हरियाणा में भी जनता इसका विरोध करने लगी है। लगातार बढ़ते इस विरोध को ध्यान में रखकर 27 दिसम्बर को मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता वाली

अवकाश पीठ ने इस पर स्थगनादेश जारी कर सुनवाई शुरू की, लेकिन सरकार और न्यायालय की मंशा भांपकर आम लोग सार्वजनिक उपयोग की जमीन को बचाने के लिए संघर्ष का बिगुल फूंक चुके हैं। 'अरावली संरक्षण आंदोलन' और 'ओरण क्षेत्र' की रक्षा में लगे समूह एकजुट हो रहे हैं। जन-जागरण के लिए दोनों समूहों की सक्रियता साफ दिखती है। सार्वजनिक उपयोग की भूमि उद्योगपतियों को सौंपने के मामले में सरकार को आने वाले समय में मुश्किलों का सामना करना होगा।

अरावली संरक्षण को लेकर उठे हाल के जनांदोलन ने एक बार फिर चरोखर यानि 'ओरण' और दुधारू पशुओं की अहमियत भी उजागर कर दी है। दरअसल पर्यावरण आसपास की तमाम-ओ-तमाम प्राकृतिक इकाइयों के मिलने से बनता है जिनमें चरोखर और पशु भी शामिल हैं।

गौरक्षा आंदोलन के प्रवर्तक संत समाज के लोग भी इस जनांदोलन से जुड़कर विरोध दर्ज कर रहे हैं। हालांकि राजसत्ता के सामने इनकी हस्ती भी 1966 से ही 'पब्लिक डोमेन' में रही है। इंदिरा गांधी की सरकार ने देश को आईना दिखाया था। महात्मा गांधी और संघ परिवार से जुड़े धर्मपाल जी की अध्यक्षता में 'राष्ट्रीय पशु आयोग' का गठन कर 2001 में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार ने एक पहल अवश्य शुरू की थी।

उन्नीसवीं सदी में भारत की राजनीतिक स्थिति इतनी खराब थी कि इसे ब्रिटिश उपनिवेश का हिस्सा होना पड़ा था। इसके साथ ही बड़े पैमाने पर गौहत्या का नया दौर शुरू हुआ। हालांकि गोकशी मुगलों के समय ही जारी थी। अंग्रेजों ने बड़े पैमाने पर कत्लखाने बनाए थे। अंग्रेजी राज में सन् 1808 से 1947 के बीच बाजार को ध्यान में रखकर खोले गए बूचड़खाने की वजह से गाय का मांस और खाल विदेशी बाजार की जरूरतों को भी पूरा करने लगा। हालांकि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान के अनुच्छेद 48 में गौहत्या पर प्रतिबंध लगाने का असफल प्रयास अवश्य शुरु हुआ, लेकिन शोषण की यह दास्तान आज भी जारी है। इस नई औपनिवेशिक परंपरा को तोड़ना भारतीय अस्मिता से जुड़ा गंभीर मामला है। गांधी इसे स्वतंत्रता की प्राप्ति से रत्ती भर कमतर नहीं आंकते थे। राजस्थान की स्थानीय संस्कृतियों से इतर पश्चिमी देशों के राजनीतिक दर्शन में वैज्ञानिक तकनीकी की अहम भूमिका है। इसका प्रभाव युद्ध से लेकर प्रकृति के दोहन तक विद्यमान है। इसने शारीरिक श्रम पर आधारित कृषि व गौसेवा के भारतीय दर्शन को बदलकर रख दिया है। गोबर और गोमूत्र जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। रासायनिक खाद और कीटनाशकों की वजह से क्षय हुई भूमि की गुणवत्ता सुधारने में इनकी अहम भूमिका हो सकती है। इक्कीसवीं सदी में 'श्री-अन्न' की पैरवी करने वाला भारत क्या अपनी ही पुरानी कृषि संस्कृति का पुनरुद्धार कर सकेगा? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के क्रम में कई गांठों को खोलने की आवश्यकता है।

आजादी के बाद खेत जोतने में सक्षम बैलों की जगह ट्रैक्टर का इस्तेमाल प्रचलन में आ गया है। कृत्रिम गर्भाधान की तकनीक से दूसरा हमला भी किया गया। बैल और नंदी की जरूरत खत्म होती गई। 'गोचर भूमि' पर इन पशुओं के लिए चारागाह का प्रबंध था। इस मामले में एक और बात नजरंदाज करने योग्य नहीं है। आयुर्वेद में गाय के दूध से बने देसी घी की तुलना अमृत से की गई है। स्वास्थ्य के लिए इसे हानिकारक बताने की राजनीति भी इस कड़ी में शामिल है। इसके पीछे यदि कोई ठोस आधार रहा होता तो अब तक सामने अवश्य आता। यह अमरीकी 'फार्मा लॉबी' और आधुनिक चिकित्सा पद्धति के बीच गठजोड़ को ही दर्शाता है। इस मामले में एक ऐसी 'राष्ट्रीय गोसेवा नीति' की जरूरत है, जो गौ-हत्या रोकने और 'गोचर भूमि' संरक्षण के साथ ही इन सभी समस्याओं को दूर करती हो। कृतज्ञता और सभी का हित गाय के प्रति श्रद्धा का मूल आधार है। 'राष्ट्रीय गोसेवा नीति' के केन्द्र में इन्हें होना चाहिए।

(सप्रेस)

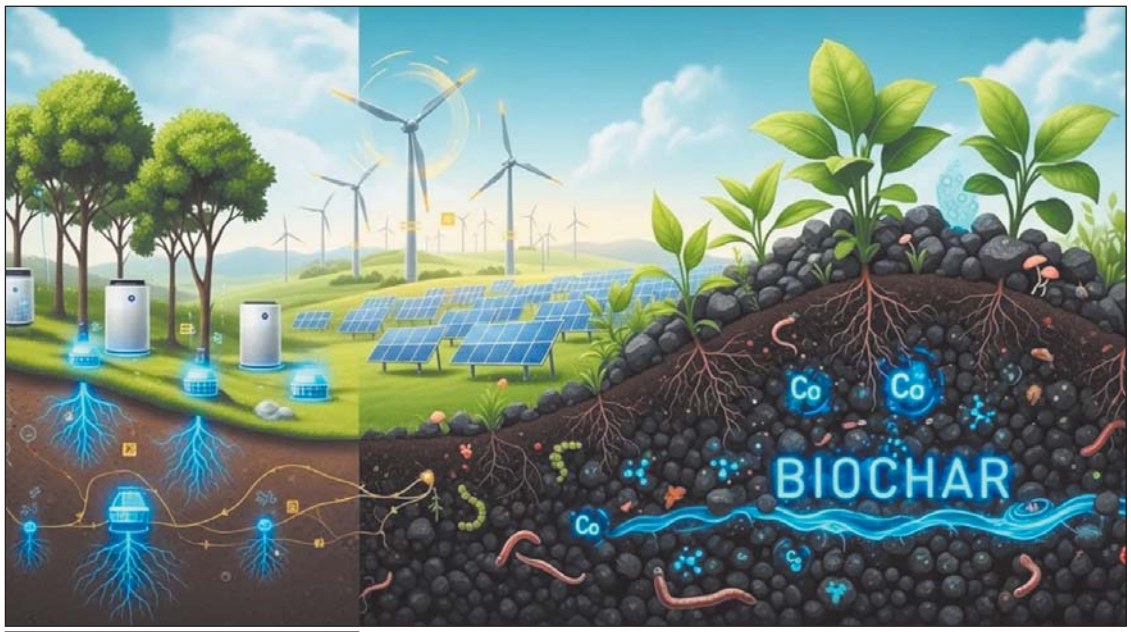

बायोचार कृषि एवं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक नवाचारी समाधान

● श्रीमती रिया ठाकुर
● डॉ. आर. के. झाड़े
● डॉ. अजय हलधर, सहायक
riyath29@gmail.com

आधुनिक कृषि प्रणाली आज जिस संक्रमण काल से गुजर रही है, वह केवल उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि मृदा स्वास्थ्य, पर्यावरणीय स्थिरता और जलवायु परिवर्तन जैसे व्यापक प्रश्नों से भी गहराई से जुड़ी हुई है। हरित क्रांति के पश्चात कृषि उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि तो हुई, परंतु इसके साथ-साथ रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और गहन जुताई आधारित खेती के कारण मृदा की जैविक गुणवत्ता में निरंतर गिरावट देखी गई है। मृदा जैविक कार्बन का ह्रास, मृदा संरचना का क्षरण, पोषक तत्वों की उपयोग दक्षता में कमी तथा जल संसाधनों पर बढ़ता दबाव आज वैश्विक कृषि की प्रमुख समस्याओं में शामिल हैं। इन परिस्थितियों में कृषि वैज्ञानिकों और पर्यावरणविदों का ध्यान ऐसी तकनीकों की ओर केंद्रित हुआ है, जो न केवल उत्पादकता बनाए रखें, बल्कि दीर्घकाल में मृदा और पर्यावरण की रक्षा भी करें। इसी संदर्भ में बायोचार एक अत्यंत महत्वपूर्ण, वैज्ञानिक रूप से समर्थित और बहुआयामी समाधान के रूप में उभरा है।

बायोचार को सामान्यतः जैविक अवशेषों से प्राप्त एक स्थिर, कार्बन-समृद्ध पदार्थ के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसे सीमित अथवा पूर्णतः अनुपस्थित ऑक्सीजन की दशा में नियंत्रित तापमान पर पायरोलिसिस प्रक्रिया द्वारा निर्मित किया जाता है। यह परिभाषा अपने आप में बायोचार की विशिष्टता को स्पष्ट करती है, क्योंकि यह साधारण जैविक खाद या चारकोल से मूलतः भिन्न है। जहाँ जैविक खाद शीघ्र विघटित होकर अल्पकालिक पोषक तत्व प्रदान करती है, वहीं बायोचार अत्यधिक स्थिर होता है और मृदा में सैकड़ों वर्षों तक बना रह सकता है। इसी स्थायित्व के कारण बायोचार को कार्बन स्थिरीकरण की एक प्रभावी तकनीक माना जाता है, जो वायुमंडल से कार्बन डाइऑक्साइड को हटाकर मृदा में सुरक्षित रूप से संग्रहित करने में सक्षम है।

बायोचार निर्माण की प्रक्रिया

बायोचार बनाने की प्रमुख विधियाँ

धीमी पायरोलिसिस
- कम तापमान और अधिक समय
- तापमानः 300-500
- अधिक मात्रा में बायोचार प्राप्त होता है।

तेज पायरोलिसिस
- अधिक तापमान और कम समय
- तापमान : 500-700
- बायो-ऑयल अधिक, बायोचार कम

गैसीफिकेशन
- आंशिक ऑक्सीजन की उपस्थिति
- ऊर्जा उत्पादन के साथ बायोचार उप-उत्पाद के रूप में

पारंपरिक ग्रामीण विधियाँ
- गड्ढा विधि
- ड्रम/भट्टी विधि
- कम लागत, छोटे किसानों हेतु उपयुक्त

ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो बायोचार आधारित मृदा प्रबंधन की अवधारणा पूर्णतः आधुनिक नहीं है। अमेजन बेसिन की प्रसिद्ध 'टेरा प्रेटा' मिट्टियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि प्राचीन सभ्यताओं ने जैविक अवशेषों को नियंत्रित रूप से जलाकर मृदा में सम्मिलित किया, जिससे मिट्टी की उर्वरता दीर्घकाल तक बनी रही। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि इन मिट्टियों में उच्च जैविक कार्बन, बेहतर जल धारण क्षमता और असाधारण सूक्ष्मजीव विविधता पाई जाती है। यह तथ्य बायोचार के दीर्घकालिक मृदा सुधार प्रभाव को ऐतिहासिक और वैज्ञानिक दोनों स्तरों पर प्रमाणित करता है।

बायोचार की प्रभावशीलता मुख्यतः उसके भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणों के संयुक्त प्रभाव का परिणाम होती है। भौतिक दृष्टि से बायोचार अत्यधिक छिद्रयुक्त होता है, जिसके कारण इसका सतह क्षेत्रफल अत्यंत अधिक होता है। यह छिद्रयुक्त संरचना मिट्टी में वायु और जल के संतुलन को सुधारती है, जिससे जड़ों का विकास बेहतर होता है। विशेष रूप से भारी मिट्टियों में यह वायुसंचार को बढ़ाता है, जबकि रेतीली मिट्टियों में जल धारण क्षमता को उल्लेखनीय रूप से सुधारता है। इस प्रकार, बायोचार विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में उनकी विशिष्ट समस्याओं के समाधान के रूप में कार्य कर सकता है।

रासायनिक गुणों की दृष्टि से बायोचार में उच्च कार्बन सामग्री पाई जाती है, जो इसे विघटन के प्रति प्रतिरोधी बनाती है। इसके अतिरिक्त, बायोचार की सतह पर नकारात्मक आवेश उपस्थित होते हैं, जो पोषक तत्वों को अवशोषित कर उन्हें मृदा में बनाए रखने में सहायक होते हैं। नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटाश जैसे प्रमुख पोषक तत्वों का अपवाह कृषि प्रणालियों में एक गंभीर समस्या है, जिससे न केवल उर्वरकों की दक्षता घटती है, बल्कि जल प्रदूषण भी बढ़ता है। बायोचार इस अपवाह को कम कर पोषक तत्वों की उपलब्धता को नियंत्रित रूप से बनाए रखता है, जिससे फसलों को लंबे समय तक पोषण मिलता है।

मृदा जैविक कार्बन की दृष्टि से बायोचार का महत्व विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वैश्विक स्तर पर यह स्वीकार किया जा चुका है कि मृदा जैविक कार्बन न केवल मृदा उर्वरता का आधार है, बल्कि जलवायु परिवर्तन से निपटने का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। सामान्य जैविक पदार्थ कुछ वर्षों में विघटित हो जाते हैं, जबकि बायोचार एक स्थिर कार्बन रूप है, जो सैकड़ों वर्षों तक मृदा में बना रह सकता है। इस दीर्घकालिक स्थिरता के कारण बायोचार को 'कार्बन सिंक' के रूप में देखा जाता है, जो वायुमंडलीय कार्बन डाइऑक्साइड को स्थायी रूप से मृदा में स्थानांतरित करने में सक्षम है।

कृषि उत्पादन प्रणाली में बायोचार का प्रभाव केवल मृदा गुणों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह फसल उत्पादकता और संसाधन उपयोग दक्षता पर भी प्रत्यक्ष प्रभाव डालता है। विभिन्न फसलों पर किए गए प्रयोगों से यह स्पष्ट हुआ है कि बायोचार के प्रयोग से फसलों की जड़ वृद्धि, जल उपयोग दक्षता और पोषक तत्व अवशोषण क्षमता में सुधार होता है। विशेषकर वर्षा-आधारित और शुष्क क्षेत्रों में, जहाँ जल की उपलब्धता एक सीमित कारक होती है, बायोचार का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इससे न केवल उपज में वृद्धि होती है, बल्कि फसलों की जल तनाव सहनशीलता भी बढ़ती है।

जैविक और प्राकृतिक खेती प्रणालियों में बायोचार की भूमिका और अधिक रणनीतिक हो जाती है। प्राकृतिक खेती का मूल दर्शन रसायन-मुक्त, जीवित और आत्मनिर्भर मिट्टी पर आधारित है। बायोचार इस दर्शन के अनुरूप एक संरचनात्मक घटक के रूप में कार्य करता है। जीवामृत, घनजीवामृत और अन्य जैविक इनपुट्स के साथ मिलकर यह मृदा में एक स्थायी जैविक ढांचा निर्मित करता है, जो दीर्घकाल तक उत्पादकता को बनाए रखता है। इस संदर्भ में बायोचार को केवल एक इनपुट न मानकर प्राकृतिक खेती की आधारशिला के रूप में देखा जाना चाहिए।

पर्यावरणीय स्तर पर बायोचार के लाभ बहुआयामी हैं। यह ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने में सहायक है, विशेषकर नाइट्रस ऑक्साइड और मीथेन जैसी गैसों के संदर्भ में। इसके अतिरिक्त, कृषि अपशिष्टों का बायोचार में रूपांतरण पराली जलाने जैसी गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में, जहाँ प्रतिवर्ष करोड़ों टन कृषि अवशेष उत्पन्न होते हैं, बायोचार तकनीक अपशिष्ट प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण और मृदा सुधारकृतीनों के लिए एकीकृत समाधान प्रदान करती है।

हालाँकि, बायोचार के व्यापक उपयोग के मार्ग में कुछ व्यावहारिक और वैज्ञानिक चुनौतियाँ भी विद्यमान हैं। विभिन्न कच्चे पदार्थों से निर्मित बायोचार की गुणवत्ता में भिन्नता, उत्पादन प्रक्रिया का मानकीकरण, तथा विभिन्न मृदा-जलवायु परिस्थितियों में इसके दीर्घकालिक प्रभावों की सीमित जानकारी प्रमुख चुनौतियाँ हैं। अनुसंधान में इन पहलुओं पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि स्थान-विशिष्ट और फसल-विशिष्ट अनुशंसाएँ विकसित की जा सकें।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि बायोचार केवल एक मृदा संशोधक नहीं, बल्कि कृषि, पर्यावरण और जलवायु विज्ञान के संगम पर स्थित एक रणनीतिक नवाचार है। इसकी वैज्ञानिक समझ, तकनीकी परिष्कार और नीति-स्तरीय समर्थन के माध्यम से इसे सतत कृषि प्रणालियों का अभिन्न अंग बनाया जा सकता है। भविष्य में, कार्बन क्रेडिट, जलवायु-स्मार्ट कृषि और प्राकृतिक संसाधन संरक्षण की अवधारणाओं के साथ बायोचार का एकीकरण न केवल किसानों की आय बढ़ाने में सहायक होगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय स्थिरता सुनिश्चित करने में भी निर्णायक भूमिका निभाएगा।

जैविक दृष्टि से बायोचार को मृदा सूक्ष्मजीवों के लिए एक आदर्श आवास माना जाता है। इसकी छिद्रयुक्त संरचना लाभकारी जीवाणुओं, कवकों और माइकोराइजा के लिए सुरक्षित आश्रय प्रदान करती है। यह सूक्ष्मजीव मृदा में पोषक तत्व चक्रण, जैविक पदार्थ विघटन और पौधों की पोषक तत्व अवशोषण क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, बायोचार अप्रत्यक्ष रूप से मृदा जैविक गतिविधि को सुदृढ़ कर फसल उत्पादकता को बढ़ाता है।

आधुनिक समय की लाभकारी फसल ड्रैगन फ्रूट की खेती

● संदीप कुमार शर्मा ● डॉ. संजय सिंह
● वंशिका तिवारी

ड्रैगन फ्रूट, हिलोकेरस केक्टेसिया परिवार से संबंधित है। इसे होनोलुलु रानी व पिताया फल के नाम से भी जाना जाता है। यह संतरा, आम, पपीता, केला, सेब आदि की तुलना में अधिक पौष्टिक और फायदेमंद फल है। ड्रैगन फ्रूट बाहर से अनन्नास की भांति दिखाई देता है, लेकिन अन्दर से गूदा सफेद और काले छोटे-छोटे बीजों से भरा हुआ नाशपाती या कीवी की तरह होता है। इस आकर्षक एवं रहस्यमय फल का रंग लाल-गुलाबी होता है। इसकी त्वचा में हरे रंग की पंक्तियां होती हैं, जो ड्रैगन की तरह दिखाई देती हैं इसलिए इसको ड्रैगन फ्रूट के नाम से भी जाना जाता है। ड्रैगन फ्रूट ज्यादातर मैक्सिको और मध्य एशिया में पाया जाता है। यह फल खाने में तरबूज की तरह मीठा होता है।

बीते हुए 3 से 4 साल में जलवायु में काफी परिवर्तन आया है, सूखा पड़ने की स्थिति में भी खराब मिट्टी में भी हो सकता है ड्रैगन फ्रूट में हीलिंग के अच्छे गुण पाए जाते हैं यही कारण है की पौधे की कीमत बाजार में रु. 60 से लेकर रु. 200 तक होती हैं ड्रैगन फ्रूट की कीमत पौधों के पुराने होने पर निर्भर करती है जितना ज्यादा पुराना पौधा होता उसकी कीमत इतनी ही ज्यादा होगी 3 साल पुराने पौधे पर लगाने पर आपको जल्दी उत्पादन मिलने लगेगा।

ड्रैगन फ्रूट के मुख्य प्रकार

बाहरी रंग और गूदे के आधार पर यह फल मुख्य रूप से तीन प्रकार का होता है:

- सफेद गूदा वाला, लाल रंग का फल
- लाल गूदा वाला, लाल रंग का फल
- सफेद गूदा वाला, पीले रंग का फल पोषक तत्व

विदेशी फल है ड्रैगन फ्रूट

ड्रगन फ्रूट भारतीय फल नहीं है, लेकिन इसके लाजवाब स्वाद और लाभकारी फायदों के कारण भारत में भी इसकी मांग काफी बढ़ गयी है। यही वजह है कि हमारे देश में पंजाब, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों में इसका सर्वाधिक उत्पादन किया जा रहा है। ड्रैगन फ्रूट का उपयोग ताजे फल के रूप में करने के साथ-साथ रस, जैम तथा आइसक्रीम के रूप में भी किया जाता है। यह फल खाने में तो स्वादिष्ट लगता ही है, इसके अलावा यह अनेक गंभीर रोगों को ठीक करने की क्षमता भी रखता है।

ड्रैगन फ्रूट एक प्रकार का विदेशी फल होता है सिर्फ किसानों की आमदनी को दोगुना करती है बल्कि इसमें विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व भी पाए जाते हैं आकर्षक दिखने के कारण इस फल की बाजार में काफी ज्यादा मांग रहती है। भारत में इसकी खेती की जाती है जिसे ड्रैगन फ्रूट के नाम से जाना जाता है विभिन्न प्रकार के शहरी उपभोक्ता जो मधुमेह कार्डियो वैस्कुलर और अन्य तनाव संबंधी बीमारियों से पीड़ित हैं और प्राकृतिक उपचार को प्राथमिकता देते हैं ड्रैगन फ्रूट उन लोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है।

जलवायु

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए उष्णकटिबंधीय मौसम की स्थिति बेहतर होती है। ड्रैगन फ्रूट की खेती 50 सेमी की वार्षिक वर्षा वाले क्षेत्रों में भी हो सकती है। इसके लिए 20 डिग्री सेल्सियस से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान उपयुक्त माना जाता है। ड्रैगन फ्रूट की फसल के लिए तेज धूप की जरूरत नहीं होती है।

मृदा

ड्रैगन फ्रूट की खेती में अधिकतर बलुई दोमट या मिट्टी की दोमट आवश्यकता हो सकती है। ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए रेतीली मिट्टी बेहतर होती है। इसकी खेती करने के खेत की अच्छे से जुताई करें और खर पतवार से मुक्त हो। इसकी खेती के लिए मिट्टी का पीएम मान 5.5 से 7 के बीच हो। इसके साथ ही खेत तैयार करते वक्त ही खेत में क्षेत्रफल के हिसाब से जैविक खाद डालें।

भूमि की तैयारी

खेत अच्छी तरह से जुताई किया हुआ हो, कीट-पतंगों व खरपतवारों से मुक्त हो। भूमि में 20 से 25 टन प्रति हेक्टर की दर से अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद अथवा कम्पोस्ट मिला दें।

ड्रैगन फ्रूट की कैसे करें रोपाई

ड्रैगन फ्रूट की खेती के लिए मूल रूप से दो तरीके हैं। पहला ड्रैगन को सीधे चाकू से काटकर दो भागों में बांटकर उसके अंदर से काले बीज निकाल कर खेती के लिए उसका उपयोग कर सकते हैं। पर इसस पौधे उगाने में समय लगता है इसलिए कमर्शियल खेती के लिए यह उचित नहीं है। दूसरा तरीका है इसके कटिंग को खेत में लगाना। ड्रैगन फ्रूट की रोपाई से दो दिन पहले मदर ड्रैगन पौधों को 20 सेमी की लंबाई में काट लें और लगाने से पहले इस कटिंग पीस को सूखे गोबर, ऊपरी मिट्टी और रेत के मिश्रण के साथ 1:1:2 के अनुपात में एक बर्तन में रखें। इन कटे हुए टुकड़ों से धूप से बचें।

प्रत्येक पौधे को उनके बीच 2×2 मीटर की जगह रखें और 60×60× 60 सेमी आकार के गड्ढे में लगाएं। साथ ही इस गड्ढे को 100 ग्राम सुपर फास्फेट खाद से भर दें। 1 एकड़ भूमि में लगभग 1700 ड्रैगन फ्रूट के पौधे हैं। पौधे के समुचित विकास और विकास के लिए कांक्रीट या लकड़ी के स्तंभों का सहारा लें।

अंतरण

अधिक उत्पादन के लिए पौधे से पौधे एवं पंक्ति से पंक्ति के बीच की दूरी 2×2 मीटर रखते हैं। गड्ढे का आकार 60×60×60 सें.मी. रखते हैं।

पादप सघनता

ड्रैगन फ्रूट से अधिकतम उत्पादन लेने के लिए

एक हेक्टर भूमि में लगभग 277 पौधे लगाए जा सकते हैं। ट्रिमिंग व प्रूनिंग पौधों की सीधी वृद्धि एवं विकास के लिए इनको लकड़ी व सीमेंट के खंभों से सहारा प्रदान करें। अपरिपक्व पादप तनों को इन खंभों से बांधकर, पार्श्विक शाखाओं को सीमित रखते हुए दो से तीन मुख्य तनों को बढ़ने के लिए छोड़ दें। इसके बाद इसके ढांचे को गोलाकार रूप में सुरक्षित कर लें।

खाद एवं उर्वरक

अधिक उत्पादन लेने के लिए प्रत्येक पौधे को अच्छी सड़ी हुई 10 से 15 कि.ग्रा. गोबर या कम्पोस्ट खाद दें। इसके अलावा लगभग 250 ग्राम नीम की खली, 30-40 ग्राम फोरेट एवं 5-7 ग्राम बाविस्टीन प्रत्येक गड्ढे में अच्छी तरह मिला देने से पौधों में मृदाजनित रोग एवं कीट नहीं लगते हैं। 50 ग्राम यूरिया, 50 ग्राम सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 100 ग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश का मिश्रण बनाकर पौधों को फूल आने से पहले अप्रैल में फल विकास अवस्था तथा जुलाई-अगस्त और फल तुड़ाई के बाद दिसबंर में दें।

सिंचाई

ड्रिप इरिगेशन, स्प्रिंकलर इरिगेशन, माइक्रो जेट और बेसिन इरिगेशन जैसी नवीनतम तकनीक में कई सिंचाई प्रणालियाँ उपलब्ध हैं लेकिन ड्रैगन फ्रूट प्लांट को अन्य फलों की खेती की तुलना में कम पानी की आवश्यकता होती है।

ड्रैगन फ्रूट के पौधे लगाने के एक साल बाद फल लगने शुरू हो जाते हैं। फूल आने के एक महीने बाद, ड्रैगन फ्रूट कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। अपरिपक्व ड्रैगन फ्रूट में चमकीले हरे रंग की त्वचा होती है। कुछ दिनों बाद फलों का छिलका गहरे हरे से लाल रंग का हो जाता है। ड्रैगन फ्रूट की कटाई का बेहतर समय फल के त्वचा का रंग बदलने के 3 से 4 दिन बाद होता है।

कीट एवं व्याधियां

सामान्यत: ड्रैगन फ्रूट में कीट और व्याधियों का प्रकोप कम होता है। फिर भी इसमें एंथ्रेक्नोज रोग व थ्रिप्स कीट का प्रकोप देखा गया है। एंथ्रेक्नोज रोग के नियंत्रण के लिए मैन्कोजेब दवा के घोल का 0.25 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें। थ्रिप्स के लिए एसीफेट दवा का 0.1 प्रतिशत की दर से छिड़काव करें।

तुड़ाई

प्राय: ड्रैगन फ्रूट प्रथम वर्ष में फल देना शुरू कर देता है। सामान्यत: मई और जून में फूल लगते हैं तथा जुलाई से दिसंबर तक फल लगते हैं। पुष्पण के एक महीने बाद फल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस अवधि के दौरान इसकी 6 तुड़ाई की जा सकती है। ड्रैगन फ्रूट के कच्चे फल हरे रंग के होते हैं, जो पकने पर लाल रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। फलों की तुड़ाई का सही समय रंग परिवर्तित होने के तीन-चार दिनों बाद का होता है। फलों की तुड़ाई दरांती या हाथ से की जाती है।

उपज

ड्रैगन फ्रूट का पौधा एक सीजन में 3 से 4 बार फल देता है। प्रत्येक फल का वजन लगभग 300 से 800 ग्राम तक होता है। एक पौधे पर 50 से 120 फल लगते हैं। इस प्रकार इसकी औसत उपज 5 से 6 टन प्रति एकड़ होती है।

ड्रैगन फ्रूट के प्रति 100 ग्राम ताजे फल में पाए जाने वाले प्रमुख पोषक तत्व

पोषक तत्व	मात्रा	पोषक तत्व	मात्रा
नमी	85.3 प्रतिशत	विटामिन 'ए'	0.01 मि.ग्रा
प्रोटीन	1.10 ग्राम	नियासिन	2.80 मि.ग्रा
वसा	9.57 मि.ग्रा.	कैल्शियम	10.20 मि.ग्रा
क्रूड फाइबर	1.34 मि.ग्रा.	आयरन	3.37 मि.ग्रा
ऊर्जा	67.70 कि. कैलोरी	मैग्नीशियम	38.90 मि.ग्रा
कार्बोहाइड्रेट	11.2 मि.ग्रा.	फास्फोरस	27.75 मि.ग्रा
ग्लूकोज	5.70 मि.ग्रा.	पोटेशियम	272.0 मि.ग्रा
फक्टोज	3.20 मि.ग्रा.	सोडियम	8.90 मि.ग्रा
सोरबिटोल	0.33 मि.ग्रा.	जिंक	0.35 मि.ग्रा
विटामिन 'सी'	3.00 मि.ग्रा		

ड्रैगन फ्रूट के स्वास्थ्य लाभ

- ड्रैगन फ्रूट फल में कोलेस्ट्रॉल को कंट्रोल करने की क्षमता होती है।
- शुगर डायबिटीज के रोगियों के लिए या काफी ज्यादा लाभदायक होता है।
- ड्रैगन फ्रूट फाइबर युक्त होता है जो आपके शरीर में आवश्यक पोषक तत्व की कमियों को पूरा करता है।
- इसका सेवन करने से कार्डियोवैस्कुलर रोग होने का खतरा कम हो जाता है।
- हार्ट अटैक जैसे गंभीर रोगों से भी बचा जा सकता है।
- ड्रैगन फ्रूट में एंटीऑक्सीडेंट गुड़ की भरपूर मात्रा उपलब्ध होती है ।
- पोटेशियम और विटामिन की भी प्रचुर मात्रा ड्रैगन फ्रूट के फल में उपलब्ध होती है।

पशुपालन - 'सुरक्षा भी, उत्पादन भी'

● वंशिका तिवारी ● डॉ. अखिलेश कुमार
● डॉ. अनिल कुमार गिरी ● डॉ. संजय सिंह
कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा

सर्दी केवल ठंड का मौसम नहीं है। यह कोहरा, पाला, ठंडी हवाएँ और बढ़ी हुई नमी लेकर आती है, जो पशुओं के लिए बड़ी चुनौती बनती हैं। यदि इस मौसम में सही प्रबंधन न किया जाए तो दूध उत्पादन घटता है, पशुओं का वजन कम होता है और निमोनिया, दस्त तथा खुरपका-मुंहपका जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

सर्दियों की प्रमुख चुनौतियाँ

● रात में तापमान 5 से 8 डिग्री सेल्सियस तक गिरना
● सुबह घना कोहरा
● खुले या अर्ध-खुले शेड में ठंडी हवाओं का प्रभाव
● अत्यधिक ठंडा पानी

इन परिस्थितियों में पशुपालन के लिए विशेष सावधानी आवश्यक है।

गाय-भैंस पालन : आवास व्यवस्था

अधिकतर पशु खुले या अर्ध-खुले शेड में रखे जाते हैं। सर्दियों में निम्न बातों का ध्यान रखें:

● शेड उत्तर-दक्षिण दिशा में हो।
● पश्चिम और उत्तर दिशा से तिरपाल या बोरी द्वारा ढकाव करें।
● फर्श ऊँचा और पूरी तरह सूखा रखें।
● पुआल या भूसे की मोटी बिछावन करें।
● रात में ठंडी हवा का प्रवेश पूरी तरह रोकें।
● गीलापन और ठंडी हवा मिलकर निमोनिया का खतरा बढ़ाते हैं।

विशेष आहार (ऊर्जा वृद्धि)

ठंड में पशु शरीर की गर्मी बनाए रखने के लिए अधिक ऊर्जा खर्च करता है, इसलिए संतुलित और ऊर्जा युक्त आहार आवश्यक है।

● गेहूँ भूसा और चना भूसा
● हरा चारा जैसे बरसीम और जई
● मक्का (ऊर्जा का मुख्य स्रोत)
● सरसों या सोयाबीन खली (प्रोटीन)
● चोकर
● मिनरल मिक्सचर 50 से 60 ग्राम प्रतिदिन
● नमक 30 ग्राम प्रतिदिन

दूध देने वाली गाय या भैंस को प्रत्येक एक लीटर दूध पर लगभग 400 ग्राम अतिरिक्त दाना दें।

पानी का प्रबंधन

● सुबह 10 बजे के बाद पानी पिलाएँ।
● अत्यधिक ठंडा पानी न दें।
● यदि संभव हो तो हल्का गुनगुना पानी दें।
● अत्यधिक ठंडा पानी भूख कम कर देता है और दूध उत्पादन घटा सकता है।

सामान्य रोग और रोकथाम

सर्दियों में निम्न रोग अधिक देखे जाते हैं:

● निमोनिया
● खुरपका-मुंहपका
● गलघोटू
● थनैला

रोकथाम के लिए

● समय पर टीकाकरण कराएँ।
● प्रत्येक छह माह में कृमिनाशक दवा दें।
● खाँसी, नाक बहना या सुस्ती जैसे लक्षण दिखने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

वैज्ञानिक सलाह के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, रीवा से संपर्क किया जा सकता है, जहाँ संतुलित आहार और रोग नियंत्रण संबंधी प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन उपलब्ध है।

बकरी पालन : विशेष सावधानी

बकरी पालन तेजी से बढ़ रहा है, परंतु सर्दियों में बकरी के बच्चे सबसे अधिक संवेदनशील होते हैं।

● शेड व्यवस्था
● ऊँचे और सूखे स्थान पर शेड बनाएँ।
● बाँस या लकड़ी का फर्श रखें ताकि नमी से बचाव हो।
● बच्चों को अलग और गर्म स्थान पर रखें।
● सीधी ठंडी हवा से बचाव करें।

आहार प्रबंधन

● चना या अरहर का भूसा
● बरसीम तथा अन्य हरी पत्तियाँ
● मक्का, चोकर और खली का मिश्रण
● मिनरल मिक्सचर

सर्दियों में वजन और रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए ऊर्जा युक्त दाना आवश्यक है।

सर्दियों में उत्पादन घटने के प्रमुख कारण

कारण	परिणाम
ऊर्जा की कमी	दूध उत्पादन कम
ठंडी हवा	निमोनिया
गीला फर्श	संक्रमण
ठंडा पानी	भूख में कमी

रोग नियंत्रण

● पीपीआर का टीकाकरण
● एंटरोटॉक्सिमिया का टीकाकरण
● समय पर कृमिनाशक दवा
● दस्त, कमजोरी या सुस्ती दिखने पर तुरंत उपचार

सर्दियों में बकरी के बच्चे विशेष देखभाल की मांग करते हैं।

धूप का महत्व

सुबह 9 से 11 बजे की धूप अत्यंत लाभकारी होती है :

● विटामिन डी की प्राप्ति
● रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि
● शरीर की प्राकृतिक गर्माहट

निष्कर्ष

सर्दियाँ चुनौतीपूर्ण अवश्य हैं, परंतु सही प्रबंधन से यही मौसम लाभकारी बन सकता है।

● सुरक्षित और सूखा शेड
● ऊर्जा युक्त संतुलित आहार
● समय पर टीकाकरण
● नियमित निरीक्षण

'स्वस्थ पशु, मजबूत किसान और समृद्ध विंध्य यही सफल पशुपालन की पहचान है।'

कृषक जगत राष्ट्रीय कृषि अखबार भोपाल-जयपुर-रायपुर द्वारा प्रकाशित फसल पुस्तक श्रृंखला

जैविक खेती समृद्ध कृषक | भण्डारण के वैज्ञानिक तरीके | एकीकृत कीट प्रबंधन | मधुमक्खी पालन | जायद फसलें | सरसों | मसाला फसलें

सदाबहार खेती | चना | मृदा उर्वरता मैनुअल | खेती के उन्नत तरीके (खरीफ फसल) | खेती के उन्नत तरीके (रबी फसलें) | सोयाबीन अनुसंधान तकनीक | बाजरा की वैज्ञानिक खेती

रबी तिलहनी फसलें अलसी, कुसुम | मसूर, मटर एवं मोठ की उत्पादन तकनीक | लघु धान्य फसलों की उत्पादन तकनीक | कौशल विकास दिग्दर्शिका | गेहूं उत्पादन तकनीक | एकीकृत पोष पोषक तत्व प्रबंधन | पोष संरक्षण (खरीफ-रबी फसल सहित)

नाम ..... ग्राम.....
पोस्ट ..... तह. ..... जिला.....
फोन/मोबा. .....कुल राशि.....
ऑर्डर की गई प्रतियों की संख्या/संलग्न ड्रॉफ्ट नं. .....
मनी ऑर्डर क्र. ..... वी.पी. भेजें।

नोट : कृपया ड्राफ्ट या मनीऑर्डर कृषक जगत भोपाल के नाम नीचे लिखे पते पर भेजें

प्रधान कार्यालय : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011
फोन: 0755-4248100,2554864, मो. : 9826255861
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर
मो. : 09826021837

संतुलित खेती : समस्या से समाधान की ओर

आज खेती का स्वरूप तेजी से बदल रहा है। रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग लगातार बढ़ा है। शुरुआत में इनसे बेहतर परिणाम मिले, लेकिन समय के साथ मिट्टी कमजोर होने लगी, नई बीमारियाँ बढ़ीं और कीटों में दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो गई। नतीजा यह हुआ कि हर नई फसल के साथ रसायनों की मात्रा भी बढ़ती गई और किसान एक ऐसे 'केमिकल कुचक्र' में फँस गया, जहाँ समाधान ही धीरे-धीरे समस्या बनता चला गया।

हर किसान के लिए तुरंत संभव नहीं

अधिकांश किसान इस नुकसान को समझते हैं, फिर भी अत्यधिक रसायनों का उपयोग छोड़ नहीं पाते। कारण स्पष्ट है- उत्पादन घटने का डर और व्यवहारिक विकल्पों की कमी। पूरी तरह जैविक खेती अपनाना हर किसान के लिए तुरंत संभव नहीं होता, क्योंकि आय पर सीधा असर पड़ता है। ऐसे में किसानों द्वारा मिट्टी को बचाने और उत्पादन को स्थिर बनाए रखने के बीच संतुलन की तलाश शुरू हुई, जिसने 'संतुलित खेती' के इस अभियान को जन्म दिया।

मिट्टी पहले जैसी नहीं रही

इसी संतुलन की खोज की झलक मध्यप्रदेश के इटारसी क्षेत्र के सनखेड़ी गाँव के किसान 'गोविन्द चौरे' जी के जीवन में भी साफ तौर पर दिखाई देती है। पाँच एकड़ जमीन पर पारंपरिक फसलें उगाने वाले गोविन्द भी अत्यधिक रासायनिक उत्पादों का इस्तेमाल करते थे। हर साल बार-बार रासायनिक दवाइयों और उर्वरकों के छिड़काव के बावजूद उन्हें लगता था कि यही खेती का एकमात्र रास्ता है। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें महसूस होने लगा कि मिट्टी पहले जैसी नहीं रही मानो मिट्टी बंजर होने की तरफ बढ़ रही है।

गोविन्द जी ने विकल्प खोजने शुरू किए, पर पूरी तरह जैविक खेती अपनाना जोखिम भरा लगा। इसी दौरान उन्हें संतुलित खेती के बारे में जानकारी मिली- यह एकमात्र ऐसा तरीका है, जिसमें केमिकल को एक साथ पूरी तरह छोड़ने के बजाय किसान अपनी सुविधा और परिस्थिति के अनुसार धीरे-धीरे कम कर सकता है। संतुलित खेती किसानों को अपनी जरूरत और हालात के अनुसार धीरे-धीरे बदलाव करने की छूट देती है। कई किसानों ने पहले ही सीजन से केमिकल की मात्रा 50 प्रतिशत कम कर दी, फिर भी उत्पादन लगभग पहले जैसा ही बना रहा।

रसायनों की मात्रा कम की

गोविन्द जी ने रसायनों की मात्रा कम की, गैर रासायनिक उपाय जोड़े और खेत की जरूरत के अनुसार पोषण प्रबंधन करना शुरू किया, और पहले जहाँ उत्पादन 15 क्विंटल प्रति एकड़ वही अभी भी 14.5 से 15 क्विंटल प्रति एकड़ बना रहा। गोविन्द जी का कहना है कि 'संतुलित खेती' उन्हें एक आशा की किरण की तरह लगती है, क्योंकि यह बिना उत्पादन घटाए भविष्य में भी मिट्टी को स्वस्थ रखने का रास्ता दिखाती है। उनका मानना है कि यही तरीका आने वाले समय में किसानों को उत्पादन और मिट्टी की सेहत के बीच संतुलन बनाने में बहुत लाभकारी साबित होगा।

जैविक कार्बन की मात्रा लगभग 1 प्रतिशत

विशेषज्ञ बताते हैं कि 1950 के दशक में भारतीय मिट्टी में जैविक कार्बन की मात्रा लगभग 1 प्रतिशत हुआ करती थी, लेकिन आज यह घटकर अधिकांश इलाकों में केवल 0.3-0.4 प्रतिशत के बीच रह गई है। यह स्तर स्वस्थ और उत्पादक मिट्टी के लिए आवश्यक मानक से काफी नीचे है। चेतावनी यह भी है कि यदि जैविक कार्बन 0.3 प्रतिशत से कम हो गया, तो भूमि की उर्वरता गंभीर रूप से प्रभावित होगी और वह बंजर होने की स्थिति तक पहुँच सकती है। संतुलित खेती इस गिरावट को रोकने का एक व्यवहारिक उपाय बन सकती है।

आज गोविन्द जी जैसे किसान इस बात के उदाहरण बन रहे हैं कि खेती में बदलाव केवल नई तकनीक से ही नहीं, बल्कि सोच में परिवर्तन से भी आ सकता है। जब किसान तात्कालिक लाभ के साथ-साथ मिट्टी के दीर्घकालीन स्वास्थ्य को भी महत्व देने लगता है, तभी वह अन्य व्यवहारिक विकल्पों को खोजता है।

संतुलित खेती दरअसल उसी खोज का परिणाम है एक ऐसा मध्य मार्ग जो वर्तमान की जरूरतों और भविष्य की सुरक्षा दोनों को साथ लेकर चलता है। यह न तो पूरी तरह रसायनों पर निर्भर है और न ही तुरंत सब कुछ बदल देने की मांग करता है, बल्कि धीरे-धीरे उस दिशा में ले जाता है जहाँ खेती लाभकारी भी रहे और मिटटी भी अपने पुराने स्वस्थ स्वरूप में लौटे।

समस्या -समाधान

समस्या : पूसा में विकसित चारा फसलों की किस्मों की जानकारी दें?

समाधान: पूसा ने चारा फसलों के रूप में ज्वार की एकल कटाई एवं बहु कटाई वाली संकर किस्में विकसित की हैं। एकल कटाई वाली प्रजातियाँ है पूसा चरी-6 एवं पूसा चरी-9 और बहु कटाई वाली किस्मों, पूसा चरी-23, पूसा चरी संकर-106, पूसा चरी-615, पूसा चरी-109 हैं। पूसा चरी-106 एवं पूसा चरी-23 पूरे भारत के लिए अनुमोदित है जबकि पूसा चरी-615, पूसा चरी -109 राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लिए अनुमोदित है।

समस्या : पूसा चरी 106 की क्या विशेषता है?

समाधान: पूसा चरी 106 गर्मी एवं खरीफ के मौसम में सिंचित अवस्था में बुवाई के लिए उपयुक्त है। यह बहुकटाई वाली पहली संकर किस्म है जिसकी पत्तियां लम्बे समय तक हरी बनी रहती हैं। तना रसदार व मीठा होता है जिसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक (8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर) होती है। यह फसल 50-55 दिनों में पहली कटाई के लिए तैयार हो जाती है।

समस्या : जौ की अधिक उपज देने वाली किस्में बताइए?

समाधान: जौ की नवीनतम अधिक उपज वाली प्रजातियां निम्नलिखित हैं। समय से बुआई के लिए डीडब्ल्यूआरबी-92, डीडब्ल्यूआरबी-101 एवं पिछेती बुआई के लिए, डी.डब्ल्यू.आर.बी.-73, डी.डब्ल्यू.आर.बी.-91, बी.एच.-885 हैं।

समस्या : अनाज भंडारण की सस्ती तकनीक क्या है?

समाधान: अनाज में नमी का प्रतिशत- किसान भाई इस बात को अच्छी तरह से जान ले कि खाद्यान्न पदार्थ में कीड़ों की प्रकोप के लिए एक निश्चित प्रतिशत में नमी होना आवश्यक है। अनाज भंडारण के समय 8-10 प्रतिशत या इससे कम कर देने पर खपरा बीटल को छोड़कर किसी भी अन्य कीट का आक्रमण नहीं होता। खपरा बीटल (टोगोडरमा ग्रेनेरियम) कीट 2 प्रतिशत नमी तक भी जिन्दा रहता है, बड़े गोदामों में नमी रोधी संयंत्र लगाना चाहिए। जिससे बरसात में भी नमी नहीं बढ़े। उपलब्ध आक्सीजन- अनाज वायुरोधी भंडारगृह में रखना चाहिए। बीज को जीवित रखने के लिए केवल 1 प्रतिशत आक्सीजन की आवश्यकता होती है तथा कीटों को भी श्वसन हेतु आक्सीजन की आवश्यकता होती है। खपरा बीटल 16.8 प्रतिशत से कम आक्सीजन होने पर आक्रमण नहीं करता है। अर्थात् भंडारण में आक्सीजन कम करके कीड़ों की रोकथाम की जा सकती है। आक्सीजन का प्रसार होने पर कीट अधिक लगते है। तापक्रम- नमी की तरह कीटों के विकास के लिए एक निश्चित तापक्रम की आवश्यकता होती है जो कीटों के अधिक विकास के लिए 28 से 32 डिग्री सेन्टीग्रेड होती है।

निवेदन

समस्या-समाधान स्तंभ में पाठकों से निवेदन है कि अपनी खेती-किसानी संबंधी समस्या कृषि विशेषज्ञों से निराकरण करने हेतु वाट्सएप पर भेजें. एक बार में केवल एक प्रमुख समस्या ही वाट्सएप पर लिखकर भेजें. वाट्सएप हेल्पलाइन नं. 6262166222.

समस्या-समाधान

कृषक जगत 14, इंदिरा प्रेस काम्प्लेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल (म.प्र.)
फोन-0755-4248100,2554864

किसान भाइयों को कृषि सलाह

गेहूं : कई स्थानों पर गेहूं को खड़ी फसल में ज्यादा नमी के कारण पीलापन दिखाई दे रहा है अतः किसान भाइयों को सलाह है कि NPK 19:19:19 पानी में घुलनशील खाद की 100 ग्राम मात्रा प्रति पम्प की दर से पत्तियों पर छिड़काव करें। पूर्व में बोई गई गेहूं फसल में विभिन्न क्रांतिक अवस्थाओं में सिंचाई करें तथा सिंचाई के बाद शेष बची यूरिया का छिड़काव अवश्य करें। यूरिया का छिड़काव करते समय इस बात का ध्यान रखें की पत्तियों पर पानी न हो तथा यूरिया चिपक न जाये। चूहों की रोकथाम करने के लिए जिंक फास्फाइड दवा को कोई भी खाद्य पदार्थ में अच्छी प्रकार से मिला डाल दें।

चना : चने की फसल में फली आना प्रारंभ हो गई हैं तो इस स्थिति में सिंचाई न करें, चने की फसल में दूसरी सिंचाई 50% फली बनने की अवस्था में करें। चने की फसल में फली आना प्रारंभ हो गए हैं, फली बनने के समय फली छेदक कीट के आक्रमण की ज्यादा संभावना होती है अतः रोकथाम हेतु इन्डोक्साकार्ब 14.5% 58 @ 12-15ml/ पंप की दर से स्प्रे करें। चने की फसल में प्रारम्भिक कीट नियंत्रण हेतु एकीकृत कीट प्रबंधन का प्रयोग जैसे फेरोमोन प्रपंच, प्रकाश प्रपंच या खेतों में पक्षियों के बैठने हेतु खूटी लगाना लाभकारी होता है।

सरसों : पिछले कुछ दिनों से बादल रहने के कारण सरसों की फसल में चूर्णिल आसिता बीमारी के प्रकोप की संभावना बन रही है अतः फसल की सतत निगरानी करते रहें तथा अधिक प्रकोप होने पर 20 कि.ग्रा. गंधक चूर्ण का भुरकाव करें या 750 मि.ली. डाइनोकेप (केराथेन 30 एल.सी.) को पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। अल्टरनेरिया ब्लाइट, डाउनी मिल्ड्यू और लीफ स्पॉट के लिए लगातार निगरानी रखें, यदि कोई बीमारी दिखे तो मैनकोजेब 75% WP 2-5 ग्राम प्रति लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। रस चूसने वाले कीटों के लिए लगातार निगरानी रखें, यदि संक्रमण दिखे तो थायोमेथोक्सम 5.0-7.5 ग्राम/पंप 0.35-0.5 ग्राम/लीटर का स्प्रे करें।

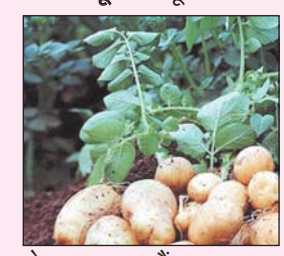

आलू : आलू फसल में कंद बन चुका है यह सिंचाई की क्रांतिक अवस्था है। अतः आवश्यकतानुसार सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। आलू में रसचूसक कीटों का प्रकोप देखा जा रहा हैं अतः सलाह है कि नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

आम : आम के बाग में सिंचाई करना बंद करें। आम में मिलिबग को नियंत्रित करने के लिए तने में ग्रीस स्ट्रिप्स का उपयोग करें और फॉलिडॉल 250 ग्राम/पौधा की दर से मिट्टी में उपयोग करें। बेर के पौधों में फलों की अच्छी वृद्धि के लिए नाइट्रोजन धारी उर्वरक के रूप में यूरिया का छिड़काव करें।

पशुपालन : दलहनी चारा फसल जैसे बरसीम, लूसर्न आदि को सूखे चारे के साथ मिलाकर कुट्टी काटकर खिलायें। पशुओं को पौष्टिक हरा चारा खिलाने के लिए उसे फूल आने के पहले ही कटाई करें। पशुओं को ठंड से बचाने हेतु पक्के फर्श को धान की पुआल या कूड़े से आच्छादित करें जो थर्मल मल्व प्रदान करता है। सभी दुग्ध जानवरों को रात के दौरान विशेष रूप से संरक्षित और सुरक्षित मवेशी शेड में रखें। पशुशाला में पशुओं को मच्छरों एवं अन्य कीटों से बचाव हेतु गीला कूड़ा-कचरा जलाकर धुआँ करें।

स्वास्थ्य

दाल-चावल : प्रोटीन और ऊर्जायुक्त भोजन

क्यों हमारा रोज़मर्रा का आरामदायक भोजन आज की प्रोटीन-दीवानगी से अधिक स्वास्थ्यवर्धक और समझदारी भरा हो सकता है

● डॉ. राघवेन्द्र साहू ● डॉ. चन्द्रहास साहू
दुग्ध विज्ञान एवं खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय, रायपुर
ercsahu2003@yahoo.com

आज के समय में प्रोटीन सबसे अधिक चर्चा में रहने वाला पोषक तत्व बन गया है। जिम की बातचीत से लेकर सुपरमार्केट की शेल्फ़ तक, यह सुर्ख़ियां, पैकेजिंग और सोशल मीडिया क्षेत्र पर छाया हुआ है। प्रोटीन पाउडर, बार, फ़ोर्टिफ़ाइड स्नैक्स, प्लांट-बेस्ड मीट और लैब-निर्मित विकल्प सब ताक़त, फिटनेस और दीर्घायु का वादा करते हैं, वह भी अक्सर ऊँची कीमत पर। लेकिन इसी शोर-शराबे के बीच, भारत के करोड़ों घर आज भी चुपचाप और निरंतर अपनी प्रोटीन ज़रूरतें एक ऐसे भोजन से पूरी कर रहे हैं, जो शायद ही कभी सुर्खियों में आता है- दाल और चावल। सरल, सस्ता और अत्यंत परिचित यह संयोजन पीढ़ियों से विभिन्न क्षेत्रों, ऋतुओं और सामाजिक-आर्थिक वर्गों को पोषण देता आ रहा है।

आधुनिक पोषण विज्ञान अब जिस तथ्य की पुष्टि कर रहा है, वह बेहद सरल है-दाल और चावल मिलकर एक उच्च गुणवत्ता वाला, पोषण की दृष्टि से पूर्ण पौध-आधारित प्रोटीन बनाते हैं। प्रोटीन ट्रेंड्स के अस्तित्व में आने से बहुत पहले, भारतीय रसोई ने पोषण संतुलन की इस समस्या का समाधान खोज लिया था।

दाल और चावल साथ में बेहतर क्यों

चावल, जो कई पारंपरिक आहारों का मुख्य अनाज है, ऊर्जा का उत्कृष्ट स्रोत है, लेकिन इसकी अमीनो अम्ल संरचना असंतुलित होती है। इसके प्रोटीन में ग्लूटामिन, प्रोलिन, ल्यूसीन और एलैनिन की मात्रा अधिक होती है, जबकि लाइसिन, ट्रिप्टोफ़ैन, मेथियोनीन और हिस्टिडिन जैसे पोषण की दृष्टि से महत्वपूर्ण अमीनो अम्ल सीमित मात्रा में पाए जाते हैं। यद्यपि चावल में विभिन्न प्रकार के अमीनो अम्ल मौजूद होते हैं- विशेष रूप से अंकुर (जर्म) में- फिर भी कम लाइसिन के कारण इसकी प्रोटीन गुणवत्ता सीमित रह जाती है।

इसके बावजूद, चावल से प्राप्त प्रोटीन आइसोलेट्स को अत्यंत पौष्टिक माना जाता है और उनकी गुणवत्ता केसिन तथा सोया प्रोटीन के समकक्ष पाई गई है। उच्च पाचन-क्षमता और कम एलर्जेनिक गुणों के कारण चावल प्रोटीन शिशुओं और वृद्धों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है और इसे पशु-आधारित प्रोटीन का एक महत्वपूर्ण विकल्प माना जाता है। फिर भी, अकेला चावल आवश्यक अमीनो अम्लों की पूर्ति आदर्श रूप से नहीं कर पाता।

यहीं दालें इस पोषणीय कमी को प्रभावी ढंग से पूरा करती हैं। दालों में अनाजों की तुलना में लगभग दोगुनी मात्रा में प्रोटीन (लगभग 21-25 प्रतिशत) पाया जाता है और ये लाइसिन, फोलेट, आयरन, मैग्नीशियम, पोटैशियम और जिंक से भरपूर होती हैं। यद्यपि दालों में मेथियोनीन और सिस्टीन जैसे सल्फ़र-युक्त अमीनो अम्ल सीमित होते हैं, फिर भी इनके प्रोटीन अंश-मुख्यतः ग्लोब्युलिन और एल्ब्यूमिन-लाइसिन, आर्जिनिन और एस्पार्टिक अम्ल से समृद्ध होते हैं। एल्ब्यूमिन, यद्यपि कम मात्रा में पाया जाता है, लेकिन इसकी घुलनशीलता बेहतर होती है, जिससे पकाने और पाचन के दौरान यह स्टार्च और जल के साथ बेहतर अंतःक्रिया कर पाता है।

यद्यपि दाल प्रोटीन की पाचन-क्षमता संरचनात्मक कठोरता और कुछ प्रतिपोषक तत्वों के कारण अपेक्षाकृत कम होती है, लेकिन जब इन्हें अनाज के साथ मिलाया जाता है तो कुल प्रोटीन उपयोगिता में सुधार होता है। चावल दालों में कमी वाले सल्फ़र-युक्त अमीनो अम्ल प्रदान करता है, जबकि दालें चावल की लाइसिन की कमी को पूरा करती हैं। इस प्रकार दोनों मिलकर एक संतुलित और पूर्ण अमीनो अम्ल प्रोफ़ाइल बनाते हैं, जो उच्च गुणवत्ता वाले पशु प्रोटीन के समकक्ष होती है।

पोषण विज्ञान में इस सिद्धांत को प्रोटीन पूरकता (Protein Complementation) कहा जाता है। भारतीय आहार में यह अवधारणा सदियों से सहज रूप से अपनाई जाती रही है। इसलिए दाल-चावल का यह स्थायी संयोजन संयोग नहीं, बल्कि अनुभव, संस्कृति और जैविक अनुकूलता से विकसित पोषणीय बुद्धिमत्ता का परिणाम है जो इसे विश्व के सबसे टिकाऊ और पोषण-कुशल पौध-आधारित भोजनों में से एक बनाता है। **(क्रमशः)**

केसर : महकती औषधि

यूं तो केसर का उत्पत्ति स्थान दक्षिणी यूरोप का स्पेन देश है, जहां से केसर मुम्बई आई है और मुम्बई से पूरे भारत के बाजारों में पहुंचती है, लेकिन स्पेन के अलावा केसर की पैदावार ईरान, फ्रांस, इटली, ग्रीस, तुर्की, फारस और चीन में भी की जाती है। भारत में, कश्मीर के पम्पूर नामक स्थान पर और जम्मू के किश्तवाड़ नामक स्थान पर केसर की खेती की जाती है।

केसर का उपयोग : आयुर्वेदिक नुस्खों में, खाद्य व्यंजनों में और देव पूजा आदि में तो इसका उपयोग होता ही था पर अब पान मसालों और गुटकों में भी इसका उपयोग होने लगा है। केसर बहुत ही उपयोगी गुणों से युक्त होती है। यह उत्तेजक, वाजीकारक, यौनशक्ति बनाए रखने वाली होती है। कामोत्तेजक, त्रिदोष नाशक, रुचिकर, मासिक धर्म साफ लाने वाली, गर्भाशय व योनि संकोचन जैसे रोगों को भी दूर करती है। त्वचा का रंग उज्ज्वल करने वाली, रक्तशोधक, धातु पौष्टिक, प्रदर और निम्न रक्तचाप को ठीक करने वाली, कफ नाशक, मन को प्रसन्न करने वाली, स्तन (दूध) वर्द्धक, मस्तिष्क को बल देने वाली, हृदय और रक्त के लिए हितकारी, तथा खाद्य पदार्थ और पेय (जैसे दूध) को रंगीन और सुगन्धित करने वाली होती है।

स्वास्थ्यवर्धक है श्रीफल

नारियल एवं इसका पानी दोनों ही काफी गुणकारी हैं तथा औषधि के रूप में घरेलू उपयोग में लाए जाते हैं। नारियल का पानी दूध की तरह ही एक पूर्ण आहार है। विटामिन के रूप में इसमें 'ए, बी, सी' विटामिन साथ में प्रोटीन, कैल्शियम एवं लौह तत्व पाए जाते हैं। ये सभी तत्व शरीर के विकास हेतु अत्यंत लाभदायक माने जाते हैं। यदि नारियल का और इसके पानी का उचित समय पर सही उपयोग किया जाए तो घरेलू प्रकार की कई छोटी-छोटी तकलीफों पर काबू किया जा सकता है।

● **हिचकी** –कच्चे नारियल का पानी पीने से हिचकी खत्म होती है। साथ ही उल्टी, पेट की गैस, पेटदर्द में भी लाभ होता है।

● **दमा** – नारियल की जटा को जलाकर और पावडर (राख) को शहद में मिलाकर दिन में तीन-चार बार चाटने से अच्छा फायदा होता है।

● **याददाश्त** – नारियल की गिरी में बादाम, अखरोट एवं मिश्री मिलाकर सेवन करने से स्मृति शक्ति में वृद्धि होती है।

● **नकसीर** – नाक से खून निकलने पर कच्चे नारियल का पानी नियमित रूप से पीना चाहिए। साथ ही खाली पेट नारियल के सेवन से भी रक्त का बहाव रुक जाता है।

● **मुहाँसे** – नारियल के पानी में खीरे का रस मिलाकर सुबह-शाम नियमित रूप से लगाने से चेहरे के दाग मिटते हैं। चेहरा सुंदर एवं चमकदार हो जाता है। नारियल के तेल में नींबू का रस अथवा ग्लिसरीन मिलाकर चेहरे पर लेप करने से भी मुहाँसे मिटते हैं।

● **अनिद्रा** – रात के भोजन पश्चात नियमित रूप से आधा गिलास नारियल पानी पीना चाहिए। इससे नींद अच्छी आती है।

● **सिरदर्द** – नारियल तेल में बादाम को मिलाकर तथा बारीक पीसकर सिर पर लेप लगाना चाहिए। इससे सिरदर्द में शीघ्र लाभ होता है।

● **रूसी** – नारियल के तेल में नींबू का रस मिलाकर बालों में लगाने से रूसी एवं खुश्की से छुटकारा मिलता है।

● **गर्भावस्था में** – सुबह नियमित रूप से 50 ग्राम नारियल की गिरी को चबाने से गर्भवती महिला को स्वास्थ्य में तो लाभ होता ही है। साथ ही गर्भस्थ बालक भी गौरवर्ण का एवं हृष्ट-पुष्ट होता है।

● **पेट के कीड़े** – पेट में कीड़े होने पर सुबह नाश्ते के समय एक चम्मच पिसा हुआ नारियल का सेवन करने से पेट के कृमि शीघ्र ही मर जाते है।

पाक्षिक पंचांग

2 से 15 मार्च 2026 तक
विक्रम संवत् 2082
फाल्गुन शुक्ल 14 से चैत्र कृष्ण 11 तक

दि.	माह	वार		तिथि	त्यौहार
02	मार्च	सोम	फाल्गुन शुक्ल	14	होलिका दहन
03	मार्च	मंगल	----------	15	होली उत्सव, चंद्रग्रहण
04	मार्च	बुध	चैत्र कृष्ण	1	बसंतोत्सव
05	मार्च	गुरु	----------	2	भाई दोज
06	मार्च	शुक्र	----------	3	गणेश चतुर्थी व्रत
07	मार्च	शनि	----------	4	
08	मार्च	रवि	----------	5	रंग पंचमी
09	मार्च	सोम	----------	6	एकनाथ छठ
10	मार्च	मंगल	----------	7	भानु सप्तमी
11	मार्च	बुध	----------	8	शीतलाष्टमी
12	मार्च	गुरु	----------	9	
13	मार्च	शुक्र	----------	10	
14	मार्च	शनि	----------	11	खरमास प्रारंभ
15	मार्च	रवि	----------	11	पापमोचनी एकादशी

कृषि में जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण

किसानों ने सीखे सिंचाई जल प्रबंधन के गुर : डॉ. यादव

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के अनुसंधान निदेशालय अंर्तगत संचालित अखिल भारतीय समन्वित सिंचाई जल प्रबंधन अनुसंधान परियोजना के द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ द्वारा गोद लिए गए गांव पायरी (बड़ी सादड़ी) में 'कृषि में जल उत्पादकता बढाने के लिए एक दिवसीय किसान प्रशिक्षण' का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर परियोजना प्रभारी डॉ. के.के. यादव ने किसानों को सिंचाई जल के बहु-स्तरीय उपयोग के साथ-साथ सिंचाई जल की गुणवत्ता का महत्व भी बताया। कृषि विज्ञान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रतनलाल सोलंकी ने उचित पौषक तत्व प्रबंधन द्वारा कम जल से ज्यादा पैदावार लेने के तरीकों के बारे में बताया। प्रौद्योगिकी एवं अभियांत्रिकी महाविद्यालय, उदयपुर के डॉ. मनजीत सिंह ने स्वचालित भूमिगत ड्रिप पद्धति से सिंचाई द्वारा जल की बचत करने की विधियों को विस्तार से बताते हुए फसलों की पैदावर बढ़ाने के नवीन तरीकों पर विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की।

नाबार्ड बाड़ी परियोजना के जिला समन्वयक श्री महेश पवार ने सब्जियों में ड्रिप फर्टिगेशन पद्धति से सिंचाई विषय पर किसानों को जानकारी दी एवं आने वाली गर्मियों में भिंडी, टिंडा, तरोई, ग्वारफली, लौकी आदि की खेती में सिंचाई जल प्रबंधन एवं सब्जी वाली फसलों की वैज्ञानिक खेती एवं उनकी देखभाल हेतु नवीनतम जानकारी दी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 50 किसानों ने भाग लिया।

डॉ. दीक्षित को लाइफटाइम एकेडमिक लीडरशिप अवॉर्ड

चंडीगढ़ (कृषक जगत)। डॉ. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक, राष्ट्रीय जैविक स्ट्रेस प्रबंधन संस्थान को गत दिनों आयोजित AGRIMMET 2026 के समापन समारोह में 'लाइफटाइम एकेडमिक लीडरशिप अवार्ड' से सम्मानित किया गया। सम्मेलन का आयोजन एग्री मीट फाउंडेशन भारत द्वारा किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. धीर सिंह, निदेशक-सह-कुलपति, राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल रहे। इस अवसर पर पंजाब क्षेत्र के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, वरिष्ठ वैज्ञानिक तथा लगभग 400 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

सफलता की कहानी

नवाचार से आत्मनिर्भरता की ओर

पाली। पाली जिले के सादड़ी क्षेत्र की प्रगतिशील कृषक श्रीमती हंजा देवी मेघवाल ने यह सिद्ध कर दिया है कि यदि सरकारी योजनाओं का सही मार्गदर्शन, तकनीकी सहयोग और स्वयं का संकल्प मिल जाए तो सीमित संसाधनों में भी खेती को लाभ का व्यवसाय बनाया जा सकता है। उनकी यह कहानी केवल उत्पादन की नहीं बल्कि नवाचार जोखिम लेने की क्षमता और विभागीय समन्वय की मिसाल है साथ ही महिला किसानों के लिए प्रेरणा स्रोत है एक एकड़ शेडनेट में संरक्षित खेती का सफल प्रयोग उद्यान विभाग द्वारा 95 प्रतिशत अनुदान पर लगाए गए एक एकड़ शेडनेट हाउस में वर्तमान में श्रीमती हंजा देवी ने खीरे की फसल ली हुई है।

शेडनेट संरचना के कारण तापमान व आर्द्रता का संतुलन तो होता ही है साथ ही कीट एवं रोग का प्रकोप भी कम होता है अत: फसल लागत में कमी के साथ अधिक आर्थिक लाभ होता है। शेडनेट में गुणवत्ता युक्त और समान आकार का उत्पादन होने से ओपन फील्ड की तुलना में अधिक उपज व बेहतर बाजार मूल्य मिलता है। इस संरक्षित खेती से उन्हें नियमित आय के साथ कम जोखिम और बाजार में पहचान मिली है।

नवाचार: ओपन फील्ड में स्ट्रॉबेरी की सफल खेती-जहाँ अधिकांश किसान स्ट्रॉबेरी को केवल पॉलीहाउस या शेडनेट तक सीमित मानते हैं वहीं श्रीमती हंजा देवी ने ओपन फील्ड में स्ट्रॉबेरी की खेती का सफल परीक्षण कर सभी को चौंका दिया। यह प्रयोग स्थानीय जलवायु के अनुकूल किस्म चयन, उचित मल्चिंग, सिंचाई व पोषण प्रबंधन सीमित लागत में उच्च मूल्य वाली फसल का परिणाम है। आज उनकी स्ट्रॉबेरी फसल अच्छा उत्पादन और गुणवत्तापूर्ण फल दे रही है, जो क्षेत्र के किसानों के लिए नई संभावनाओं का द्वार खोल रही है। इस उपलब्धि के पीछे मुख्यत: श्री नरेश कुमार वरिष्ठ कृषि पर्यवेक्षक सिंदरली द्वारा फसल की नियमित मॉनिटरिंग, खीरा व स्ट्रॉबेरी दोनों फसलों में तकनीकी सुझाव एवं खेत स्तर पर निरंतर संपर्क और समस्या समाधान इनकी सफलता की मजबूत नींव बनी है ।

विभागीय अधिकारियों श्री फूलाराम मेघवाल सहायक निदेशक कृषि पाली का नवाचार को प्रोत्साहन, फसल विविधीकरण पर मार्गदर्शन और निरन्तर प्रेरणा, श्री तरुण पाल सिंह, कृषि अधिकारी उद्यान विभाग पाली द्वारा शेडनेट योजना की स्वीकृति के साथ तकनीकी सलाह और फसल प्रबंधन में मार्गदर्शन तथा संरक्षित खेती को व्यावहारिक रूप से सफल बनाने में निर्णायक भूमिका अदा की है। विभाग के किसान हितैषी दृष्टिकोण से योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन आदि के समन्वित प्रयासों से यह परियोजना केवल योजना नहीं बल्कि एक मॉडल फार्म बन सकी। श्रीमती हंजा देवी मेघवाल की यह सफलता की कहानी बताती है कि अगर जज्बा हो तो सही समय पर उचित विभागीय सहायता और मार्गदर्शन के साथ महिलाएँ आधुनिक कृषि की अगुआ बन सकती हैं। सही मार्गदर्शन से परंपरागत खेती को भी लाभकारी बनाया जाकर संरक्षित खेती और नवाचार से ग्रामीण आय को नई ऊँचाई दी जा सकती है।

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

व्यक्तिगत क्लासीफाइड

विज्ञापन के लिए निर्धारित कैटेगरीज-

- बेचना/खरीदना- ट्रैक्टर, ट्राली, थ्रेशर, खेत, मकान, मोटरसाइकल, पशु, मोटर, जनरेटर आदि
- बीज ▪ औषधीय फसल

विज्ञापन दर - मात्र रु. 600/- प्रति संस्करण लगातार 4 सप्ताह तक

- अधिकतम 25 शब्द
- अतिरिक्त शब्द- 2 रु. प्रति शब्द, अधिकतम 40 शब्दों तक

डिस्प्ले क्लासीफाइड

विज्ञापन दर : रु. 800/- प्रति अंक, प्रति संस्करण
साइज : फिक्स साइज- 8 × 5 = 40 वर्ग से.मी.

कैटेगरीज- बीज, कीटनाशक, जैविक खाद, ट्रेवल्स, तीर्थ यात्रायें, आवश्यकता, ऑटोमोबाइल पार्ट्स, कृषि सेवा केन्द्र, शिक्षण संस्थाएं, प्रशिक्षण, बारदाने, कोल्ड स्टोरेज, गोदाम, होस्टल, वित्तीय संस्थाएं, चिकित्सक, एग्री क्लीनिक आदि।

कृषक जगत
की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए हेल्पलाइन नं.
(सोमवार से शनिवार प्रातः 9 बजे से शाम 7 बजे तक)
62 62 166 222
www.krishakjagat.org @krishakjagat
@krishakjagatindia @krishak_jagat

78 वर्ष
कृषक जगत
राष्ट्रीय कृषि अखबार
भोपाल-जयपुर-रायपुर

वर्ष में कई आकर्षक एवं संग्रहणीय विशेषांक
- खरीफ विशेषांक
- पौध संरक्षण विशेषांक
- रबी विशेषांक
- बीज विशेषांक
- बागवानी विशेषांक

25 लाख पाठक

कृषक जगत की सदस्यता राशि
⇨ वार्षिक रु. 600/- ⇨ दो वर्ष रु. 1000/-
⇨ तीन वर्ष रु. 1500/-

डाक से नियमित रूप से **'कृषक जगत'** – प्रति सप्ताह ☐ भोपाल ☐ जयपुर ☐ रायपुर संस्करण निम्न पते पर एक वर्ष/दो वर्ष / तीन वर्ष भेजें. (अपनी आवश्यकता के अनुरूप निशान लगायें).

नाम .....
.....
ग्राम .....पो. .....
डाक वितरण हेतु अपने क्षेत्रीय पोस्टमैन का मो. नं. अवश्य दें : .....
वि.ख. ..... तह. .....
जिला ..... पिन ☐☐☐☐☐☐ राज्य .....
शिक्षा ..... भूमि ..... उम्र .....
ट्रैक्टर/मॉडल ..... फोन/मो. .....
ई-मेल .....
मेरा सदस्यता शुल्क रुपये ..... नगद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI/Bank/
मनीऑर्डर/क्र. ..... 'कृषक जगत' भोपाल के नाम संलग्न है।

कृषक जगत में सदस्यता लेने के माध्यम
कृषक जगत ऑनलाइन पेमेंट लिंक
http://www.krishakjagat.org/krishak-jagat-subscription/index.php
Online Payment- SBI-A/C No. 53007193070, IFSC : SBIN 0005793,
Google Pay/Phone Pe/PAYTM/UPI : Mobile 9826255861
कृषक जगत हेल्पलाइन नम्बर 6262166222

पेमेंट के बाद : 1. पेमेंट का स्क्रीनशॉट भेजें इस फोन नम्बर पर 9826255861
2. पूरा नाम, पता पिन कोड के साथ भेजें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
प्रसार प्रबंधक कृषक जगत

भोपाल : 14, इंदिरा प्रेस काम्पलेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल-462011 फोन: 0755-4248100, मो. : 9926653355, 9826255861, E-mail-info@krishakjagat.org
जयपुर : एच-64, मीरा मार्ग, बनी पार्क, जयपुर (राज.), मो. : 9829254092, 7387422952
रायपुर : एलआईजी-5, सेक्टर-2, शंकर नगर, रायपुर (छ.ग.),मो.: 9826255862
इंदौर : 331-332, आर्बिट माल, ए.बी. रोड, विजय नगर चौराहे के पास इंदौर, मो. : 9826021837, 9826024864
नई दिल्ली : 403,आईएनएस बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली, मो. : 7387422952

सदस्यता शुल्क भुगतान के लिए QR कोड स्कैन करें

एरीज ग्रुप की कंपनी

अमारक केमिकल्स ने दुबई में सल्फर प्लांट शुरू किया

नई दिल्ली (कृषक जगत)। एरीज ग्रुप की सहयोगी कंपनी अमारक केमिकल्स ने दुबई के जेबेल अली में अपने पूर्णत: आटोमेटिक सल्फर प्लांट का संचालन प्रारम्भ कर दिया है। नए संयंत्र की वार्षिक स्थापित क्षमता 60,000 मीट्रिक टन है, जिसमें सल्फर बेंटोनाइट तथा अन्य वैल्यू एडेड सल्फर-आधारित कृषि इनपुट्स का निर्माण किया जाएगा। यह इकाई अंतरराष्ट्रीय बाजारों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए स्थापित की गई है, विशेषकर उन क्षेत्रों के लिए जहां मिट्टी में सल्फर की कमी पाई जाती है।

कारखाने का उद्घाटन भारत के महावाणिज्य दूतावास, दुबई के कौंसुल श्री बी. जी. कृष्णन द्वारा किया गया। इस अवसर पर जाफ़ज़ा के सेल्स निदेशक सऊद अलअवाधी तथा एरीज ग्रुप के निदेशक मंडल के सदस्य उपस्थित रहे।

अमारक वर्तमान में दक्षिण अमेरिका और एशिया-प्रशांत क्षेत्र सहित 13 देशों में निर्यात करता है, जिनमें ब्राज़ील, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड शामिल हैं। एरीज ग्रुप के अध्यक्ष डॉ. राहुल मीरचंदानी ने कहा कि जाफ़ज़ा में यह निवेश कृषि इनपुट्स के क्षेत्र में विश्वस्तरीय विनिर्माण क्षमता विकसित करने की समूह की दीर्घकालिक रणनीति का हिस्सा है। उद्घाटन समारोह में सात देशों से आए ग्राहकों ने संयंत्र का दौरा किया और इसकी ऑटोमेशन प्रणालियों का अवलोकन किया।

आईपीएल को कांडला बंदरगाह पर सम्मान

नई दिल्ली (कृषक जगत)। उर्वरक क्षेत्र की प्रमुख कंपनी इंडियन पोटाश लि. (आईपीएल) को अंतरराष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस 2026 के अवसर पर कांडला बंदरगाह और विशाखापत्तनम बंदरगाह पर उत्कृष्ट आयात प्रदर्शन के लिए सम्मानित किया गया है। आईपीएल को वित्त वर्ष 2025-26 के लिए गुजरात के कांडला बंदरगाह पर 'टॉप इम्पोर्टर' का पुरस्कार दिया गया।

'टॉप इम्पोर्टर' पुरस्कार गांधीधाम स्थित इफको ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में दिया गया। यह पुरस्कार कांडला के सीमा शुल्क आयुक्त श्री नितिन सैनी ने मुख्य अतिथि पद्मश्री सम्मानित श्री नारायण जोशी (कच्छ) की उपस्थिति में प्रदान किया। आईपीएल की ओर से गुजरात (कच्छ) के सेल्स ऑफिसर श्री जतिन शाह ने यह पुरस्कार प्राप्त किया।

आईपीएल के प्रबंध निदेशक डॉ. पी.एस. गहलौत ने कहा 'ये सम्मान हमारे आयात कार्यों में उत्कृष्टता, नियमों के पालन और विश्वसनीयता पर हमारे मजबूत फोकस को दर्शाते हैं। यह देशभर के बंदरगाहों और लॉजिस्टिक्स केंद्रों पर काम कर रही हमारी टीम की मेहनत का परिणाम है।'

जेके टायर ने 'श्रेष्ठ प्लस' ट्रैक्टर टायर लॉन्च किया

हिसार (कृषक जगत)। जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. ने आधुनिक कृषि की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए अपना नया प्रीमियम ट्रैक्टर टायर 'श्रेष्ठ प्लस' लॉन्च किया है। कंपनी का कहना है कि यह टायर बढ़ती कृषि यंत्रीकरण, अधिक हॉर्सपावर वाले ट्रैक्टरों के उपयोग और विभिन्न प्रकार की मिट्टी में लंबे समय तक काम करने की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित किया गया है।

कंपनी के अनुसार, 'श्रेष्ठ प्लस' को बेहतर ट्रैक्शन, स्थिरता और लंबी उम्र देने के उद्देश्य से डिजाइन किया गया है, ताकि किसान और कृषि कार्य से जुड़े ऑपरेटर खेत और सड़क—दोनों परिस्थितियों में बेहतर कार्यक्षमता प्राप्त कर सकें।

जेके टायर एंड इंडस्ट्रीज लि. के डायरेक्टर (सेल्स एंड मार्केटिंग) श्री श्रीनिवासु अल्लाफन ने कहा कि भारतीय कृषि तेजी से यंत्रीकरण की ओर बढ़ रही है और किसान अधिक क्षमता वाले ट्रैक्टर अपना रहे हैं। ऐसे में कंपनी का ध्यान उच्च प्रदर्शन वाले समाधान उपलब्ध कराने पर है। जेके टायर का कहना है कि उसका कृषि टायर पोर्टफोलियो विभिन्न प्रकार की मिट्टी, ट्रैक्टर श्रेणियों और कृषि कार्यों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है, और 'श्रेष्ठ प्लस' इसी श्रृंखला को और मजबूत करता है।

पारादीप फॉस्फेट्स को S&P ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2026 में स्थान

बेंगलुरु (कृषक जगत)। पारादीप फॉस्फेट्स लि. (पीपीएल) को S&P Global की S&P ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2026 में सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक सदस्य के रूप में चुना गया है। साथ ही, वर्ष 2026 में ईयरबुक में स्थान पाने वाली यह भारत की एकमात्र उर्वरक कंपनी बनी है।

श्री एन. सुरेश कृष्णन

श्री राजीव नांबियार

S&P ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी ईयरबुक 2026 उन कंपनियों को मान्यता देती है, जो अपने-अपने उद्योगों में पर्यावरण, सामाजिक और सुशासन (ESG) मानकों पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करती हैं। इस वर्ष 2025 के कॉर्पोरेट सस्टेनेबिलिटी असेसमेंट (CSA) के तहत 9,200 से अधिक कंपनियों का मूल्यांकन किया गया, जिनमें से 59 उद्योगों की केवल 848 कंपनियां 2026 संस्करण में स्थान बना सकीं।

पीपीएल के प्रबंध निदेशक एवं सीईओ श्री एन. सुरेश कृष्णन ने कहा, 'यह सम्मान एक जिम्मेदार और भविष्य के लिए तैयार उद्यम के निर्माण की हमारी दीर्घकालिक दृष्टि को दर्शाता है। फॉस्फेटिक उर्वरक उद्योग में अग्रणी कंपनी के रूप में हम सस्टेनेबिलिटी को भारत की कृषि प्रगति और राष्ट्रीय विकास का अभिन्न हिस्सा मानते हैं।'

कंपनी के अध्यक्ष एवं मुख्य परिचालन अधिकारी श्री राजीव नांबियार ने कहा, 'पीपीएल में सस्टेनेबिलिटी हमारी पूरी वैल्यू चेन में समाहित है-चाहे वह सुशासन ढांचे को मजबूत करना हो, परिचालन दक्षता बढ़ाना हो या जिम्मेदार सोर्सिंग और विनिर्माण उत्कृष्टता को आगे बढ़ाना हो।'

आईटीसी कृषि को एआई के जरिए दे रही नया रूप

नई दिल्ली (कृषक जगत)। उन्नत डिजिटल तकनीकों के माध्यम से छोटे और सीमांत किसानों को हाइपर-पर्सनलाइज्ड समाधान उपलब्ध कराने के बाद, आईटीसी अब अपने एआई नवाचारों का विस्तार एफपीओ, जैविक खेती किसानों और ग्रामीण समुदायों तक करने जा रही है। नई जेनरेटिव एआई एप्लीकेशन और एजेंटिक एआई क्षमताओं के माध्यम से कंपनी अपने ITCMAARS 'फिजिटल' इकोसिस्टम को एक सशक्त, कनेक्टेड और इंटेलिजेंस-ड्रिवन एग्री-स्टैक में परिवर्तित कर रही है। यह पहल आईटीसी के चेयरमैन श्री संजीव पूरी की 'नेक्स्ट जेन एग्रीकल्चर' रणनीति का अहम हिस्सा है। आईटीसी का लक्ष्य ITCMAARS प्लेटफॉर्म के माध्यम से 1 करोड़ किसानों तक पहुंच बनाना है, जिससे ग्रामीण विकास को गति मिले।

एफपीओ और जैविक खेती के लिए एआई समाधान- ITCMAARS एक सुपरएप के रूप में डिजिटल तकनीक और जमीनी मानव संपर्क का संयोजन है, जिसमें एफपीओ को एंकर की भूमिका दी गई है। एफपीओ के लिए अलग कस्टमाइज्ड ऐप भी उपलब्ध है। अब कंपनी एफपीओ संचालन की दक्षता बढ़ाने और उन्हें स्केल-अप करने के लिए एआई आधारित समाधान जोड़ने जा रही है।

आईटीसी एग्री बिजनेस के डिविजनल चीफ एग्जीक्यूटिव श्री एस. गणेश कुमार ने कहा कि कंपनी का उद्देश्य नवीनतम तकनीकों तक छोटे किसानों की पहुंच को लोकतांत्रिक बनाना है, ताकि वे जलवायु परिवर्तन, फसल प्रबंधन और बाजार पहुंच जैसी चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपट सकें।

एआई इम्पैक्ट समिट में प्रमुख उदाहरण- नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 के दौरान ITCMAARS को जमीनी स्तर पर एआई के प्रभावी उपयोग के उदाहरण के रूप में देखा जा रहा है। यह पहल 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' की भारतीय एआई सोच के अनुरूप है।

- **आईटीसी एफपीओ, जैविक किसानों और ग्रामीण समुदायों तक एआई समाधान का विस्तार करेगी**
- **ITCMAARS अब उन्नत एआई तकनीकों से लैस फुल-स्टैक 'फार्मिंग ऐज़ अ सर्विस' (FaaS) प्लेटफॉर्म बना**
- **11 राज्यों में 22 लाख से अधिक किसान और 2100 से ज्यादा एफपीओ लाभान्वित**
- **उर्वरक उपयोग में 10-15 प्रतिशत कमी, पैदावार में 15-20 प्रतिशत वृद्धि, किसानों की आय में लगभग 25 प्रतिशत इजाफा**

22 लाख किसान जुड़े, आय में 25% तक वृद्धि- 2022 में शुरू हुआ ITCMAARS अब फुल-स्टैक 'फार्मिंग ऐज़ अ सर्विस' समाधान बन चुका है। 11 राज्यों में 22 लाख से अधिक किसान और 2100 से ज्यादा एफपीओ इससे जुड़े हैं। पायलट आकलनों के अनुसार- उर्वरक उपयोग में 10-15% कमी, फसल उत्पादकता में 15-20% वृद्धि, किसानों की आय में लगभग 25% इजाफा।

'कृषि मित्र' बना किसानों का एआई सहायक- इस इकोसिस्टम का मुख्य आधार 'कृषि मित्र' है, जो माइक्रोसॉफ्ट के सहयोग से विकसित एआई आधारित एग्री-को-पायलट है। 8 भारतीय भाषाओं में उपलब्ध।

'क्रॉप कैलेंडर' और 'क्रॉप डॉक्टर' से सटीक सलाह- ITCMAARS पर उपलब्ध 'क्रॉप कैलेंडर' 53 फसलों के लिए वैज्ञानिक फसल योजना बनाने में मदद करता है। वहीं 'क्रॉप डॉक्टर' एआई आधारित इमेज एनालिटिक्स टूल है, जो 70 फसलों में रोग पहचान कर त्वरित उपचार सलाह देता है। इस फीचर का 3 लाख से अधिक बार उपयोग किया जा चुका है।

तिवड़ा वापस आ रहा है !

● शशिकांत त्रिवेदी,
वरिष्ठ पत्रकार
मो.: 9893355391

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के वैज्ञानिक तिवड़ा वापस लाने की कोशिश कर रहे हैं। इसे आमतौर पर खेसरी और घास मटर के नाम से जाना जाता है। किसानों की एक सभा को संबोधित करते हुए हाल ही में केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि जल्द ही बाज़ार में एक नई कम नुकसानदायक किस्म आएगी। तिवड़ा का भारत में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होता था लेकिन बाद में इस पर रोक लगा दी गई क्योंकि यह इंसानों में लेथिरिज्म बीमारी पैदा करती थी। कृषि मंत्री श्री चौहान ने कहा, 'हम अलग-अलग किस्मों से दाल का प्रोटीन निकालने के लिए प्रयोग कर रहे हैं ताकि किसानों को ज्यादा फ़ायदा हो सके।

भंडारण पर रोक लगी

भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के वैज्ञानिक तिवड़ा की उन किस्मों को तैयार कर रहे हैं जिनमे न्यूरोटॉक्सिन का स्तर काफ़ी कम हो और ये सुरक्षित किस्में हों। तिवड़ा इंसानों में न्यूरोलैथिरिज्म नाम की एक बीमारी पैदा करता है जिससे लंबे समय तक इस्तेमाल करने से पैरों में खराबी आ जाती है। इस टॉक्सिन को पहले न्यूरोलैथायरिज्म से जोड़ा गया है, जो एक पैरालिटिक डिसऑर्डर है, जिसकी वजह से 1961 से भारत में खेसरी/तिवड़ा की बिक्री और भंडारण पर रोक लगी है। कोशिशें इस तरह की जा रही हैं कि इस विषैले तत्व को कम करके इंसानों के इस्तेमाल के बजाय सुरक्षित किस्म विकसित करने पर ज़ोर दिया जा रहा है।

अन्य तकनीकों का इस्तेमाल

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् राज्य की एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर जारी की गई खास वैरायटी में रतन और प्रतीक शामिल हैं। इनमें इस विषैले तत्व का प्रतिशत 0.07 से 0.1 प्रतिशत तक होता है, जो रिस्की माने जाने वाले लेवल से काफी नीचे है, और मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, बिहार और ओडिशा जैसे सही इलाकों में 1.5 से 1.6 टन प्रति हेक्टेयर तक पैदावार देता है। शोधकर्ताओं ने पूसा-24 वैरिएंट से रतन जैसी लाइनें बनाने के लिए कन्वेंशनल हाइब्रिडाइजेशन, टिशू कल्चर और अन्य तकनीकों का इस्तेमाल किया।

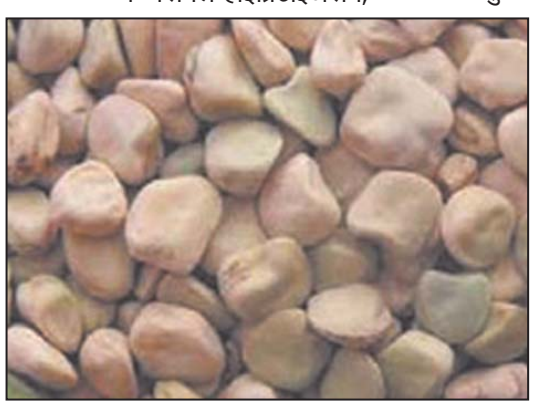

गरीब आदमी की दाल

अभी चल रहे काम में आनुवंशिक संशोधन की गुंजाइश भी है, विषैले तत्व को पूरी तरह खत्म किया जा सके। अभी शोध इस बात पर है कि सूखे की स्थिति में तिवड़ा में पाया जाने वाले विषैले तत्व का स्तर बढ़ सकता है। सन् 2023 से 2025 तक की हालिया शोध में पूर्वी भारत, खासकर बिहार में खेसरी को उगाकर देखा गया है, ताकि चावल की कटाई के बाद कम इस्तेमाल होने वाली ज़मीनों में दालों का उत्पादन बढ़ाया जा सके। तिवड़ा या खेसरी को 'गरीब आदमी की दाल' का नाम इसलिए मिला है क्योंकि यह बहुत ज़्यादा सूखे, पानी भरने और बंजर मिट्टी में भी उगती है, जहाँ दूसरी फसलें नष्ट हो जाती हैं। इसमें ज़्यादा प्रोटीन होता है, यह लगभग 125 दिनों में जल्दी पक जाती है, और खाने और चारे के तौर पर दोनों तरह से इस्तेमाल की जा सकती है। रतन और प्रतीक जैसी कम विषैले तत्व वाली किस्मों को खेती के लिए बढ़ावा दिया जा रहा है, लेकिन कमर्शियल बिक्री के लिए बड़े पैमाने पर मंज़ूरी अभी भी फ़ूड सेफ़्टी एंड स्टैंडर्ड्स अथॉरिटी ऑफ़ इंडिया और इंडियन काउंसिल ऑफ़ मेडिकल रिसर्च के अधीन है।

'स्मार्ट दाल'

कुछ राज्यों ने पाबंदियां हटाने की तैयारी कर ली हैं, और कुछ संस्थानों के अध्ययन के मुताबिक, नई किस्मों का कम इस्तेमाल दिल की बीमारियों के लिए फ़ायदेमंद हो सकता है। यह शोध बदलते पर्यावरण के हालात के बीच पौष्टिक भोजन की सुरक्षा और छोटे किसानों के लिए एक 'स्मार्ट दाल' के तौर पर दिलचस्पी पैदा करती है।

मोबाइल वेटरनरी यूनिट योजना के तहत

प्रदेश के 61 लाख से अधिक पशुओं का निःशुल्क इलाज : श्री कुमावत

जयपुर। पशुपालन मंत्री श्री जोराराम कुमावत ने विधानसभा में कहा कि राज्य सरकार द्वारा मोबाइल वेटरनरी यूनिट योजना के माध्यम से पशुपालकों को घर बैठे पशुओं के लिए निःशुल्क चिकित्सा सुविधा प्रदान की जा रही है। उन्होंने बताया कि 24 फरवरी, 2024 से प्रारंभ इस योजना के तहत 15 फरवरी, 2026 तक मोबाइल वेटरनरी यूनिट द्वारा ऑन-कॉल सेवाओं एवं शिविरों के माध्यम से 15 लाख 99 हजार 840 पशुपालकों के कुल 61 लाख 30 हजार 856 पशुओं का निःशुल्क उपचार किया गया है। उन्होंने बताया कि चूरू जिले में 35 हजार 466 पशुपालकों के 1 लाख 23 हजार 374 पशुओं का उपचार किया गया, जबकि चूरू विधानसभा क्षेत्र में 7 हजार 666 पशुपालकों के 36 हजार 549 पशुओं का निःशुल्क इलाज किया गया।

उन्होंने बताया कि योजना प्रारंभ होने के समय विभाग का कॉल सेंटर शुरू नहीं हो पाने के कारण विभाग द्वारा गांव-गांव में शिविर आयोजित कर पशुपालकों को लाभान्वित किया गया। इन शिविरों में इलाज किये गए पशुओं की संख्या भी इन आंकड़ों में शामिल है। उन्होंने बताया कि 9 अक्टूबर, 2024 को विभाग का कॉल सेंटर प्रारंभ किया गया तथा 31 दिसंबर, 2024 से यूनिट द्वारा पशुओं का ऑन-कॉल निःशुल्क उपचार नियमित रूप से प्रदान किया जा रहा है।

पशुपालन मंत्री प्रश्नकाल के दौरान विधायक श्री हरलाल सहारण द्वारा इस संबंध में पूछे गए पूरक प्रश्नों का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि मोबाइल वेटरनरी यूनिट योजना की सफलता एवं प्रदेश की विशाल भौगोलिक स्थिति को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा केंद्रीय पशुपालन मंत्री से प्रदेश में मोबाइल यूनिटों की संख्या बढ़ाने का अनुरोध किया गया है।

श्री कुमावत ने बताया कि यह योजना केंद्र प्रवर्तित योजना के अंतर्गत संचालित की जा रही है। योजना के तहत प्रदेश में 536 मोबाइल वेटरनरी यूनिट्स संचालित हैं। इन मोबाइल वाहनों की शत-प्रतिशत राशि केंद्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई है, जबकि इनके संचालन के लिए बजट व्यवस्था 60 प्रतिशत केंद्र सरकार एवं 40 प्रतिशत राज्य सरकार द्वारा वहन की जा रही है।

सर्वोत्तम गुणवत्तावाली
जैन ड्रिप की विस्तृत उत्पादन श्रृंखला -
सभी फसलों # के लिए हर किसान के बजट के अनुरूप विभिन्न प्रकार के ड्रिप सिंचाई व्यवस्था के विकल्प स्टॉक में उपलब्ध हैं।
(# दलहन, धान, तिलहन, सब्जियाँ एवं फल बागानें आदि के लिए)

नोट : ड्रिपर्स व ड्रिपलाईन अलग-अलग प्रेशर रेटिंग में उपलब्ध

जैन ड्रिप
प्रति बूंद, फसल भरपूर!
जैन इरिगेशन सिस्टम्स लि.
छोटे छोटे कदम, आसमान छूने का दम!
दूरभाष: 0257-2258011; 6600800
टोल फ्री : 1800 599 5000
ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाइट: www.jains.com

सावधान! नकल करके ड्रिप बनाने वाले एवं नकली ड्रिप कंपनियों और वितरकों से सतर्क रहें!